क्षितिज

मार्च 2026

आपत्काले रक्षिष्यामि
GIC Re

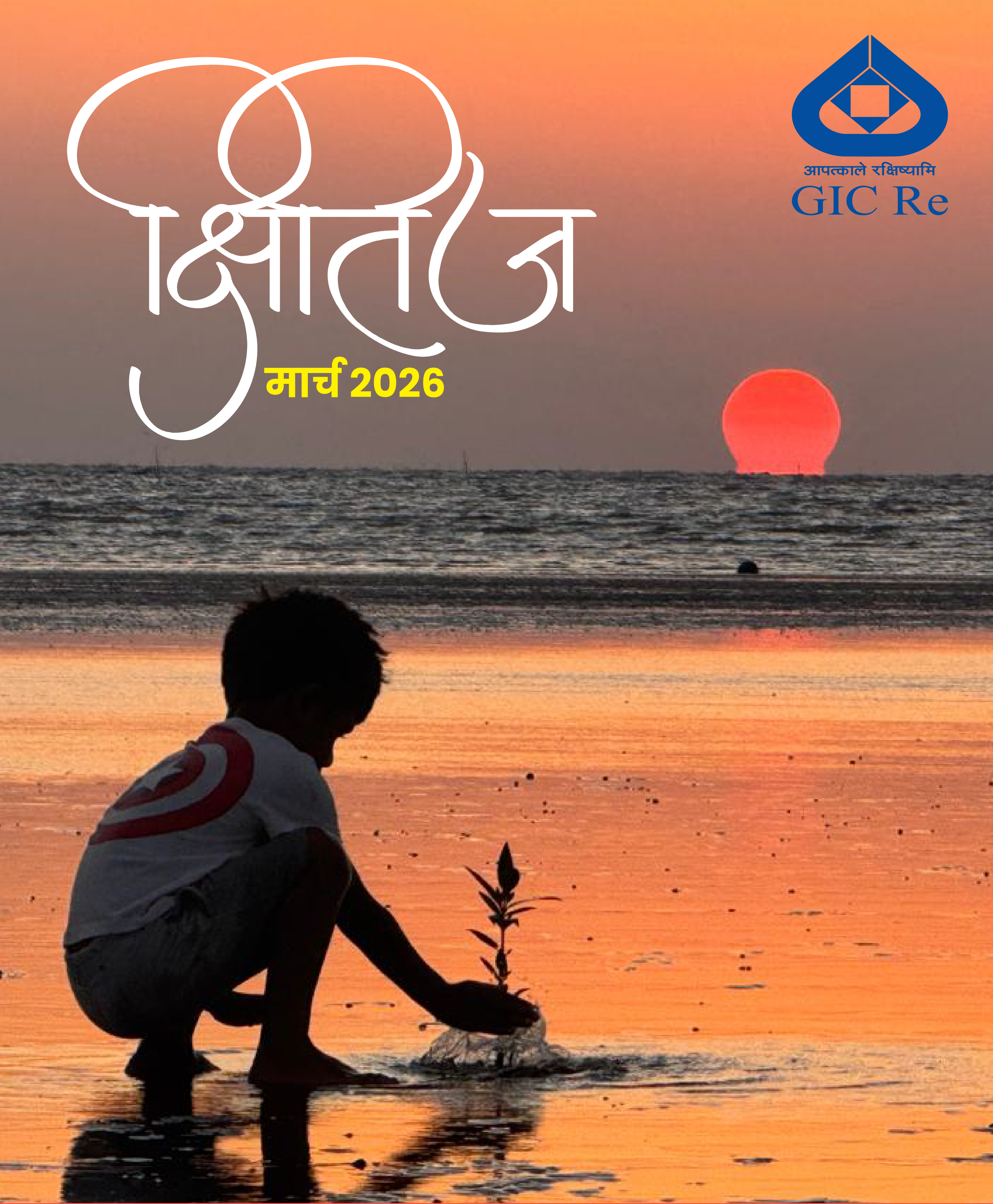

भारतीय साधारण बीमा निगम, राजभाषा विभाग, सुरक्षा, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.

राजभाषा बैठक का आयोजन – वाराणसी

अनुक्रमणिका

संरक्षक

श्री हितेश जोशी
cmd@gicre.in

संपादन

श्री राजेश खडतरे
rajeshk@gicre.in
श्रीमती ज़ेनोबिया पल्सेतिया
zenobiap@gicre.in
श्रीमती उज्वला सकळकळे
Ujjwalas@gicre.in
श्री चेतन शुक्ल
chetans@gicre.in
डॉ. इन्दिरा
indira@gicre.in
श्री राजेश सिंह
rajeshs@gicre.in

प्रकाशन समिति

श्री देशराज चढार
श्री मनीष तिवाड़ी

आवरण : मयूरी डी. राउत

संपर्क

संपादक
क्षितिज
भारतीय साधारण बीमा निगम
राजभाषा विभाग सुरक्षा,
170, जे. टाटा मार्ग,
चर्चगेट, मुंबई - 400 020

मुखपृष्ठ

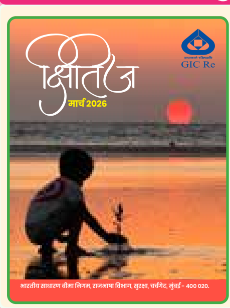

नीले जल में डूबती शाम की लालिमा,
क्षितिज पे ठहर जाती प्रकृति की गरिमा।
समुद्र की बाहों में खो जाती हर थकान,
मन को दे जाती एक अनकही मुस्कान।

विषय	लेखन	पृष्ठ सं.
• अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से	हितेश जोशी	4
• संपादकीय	चेतन शुक्ल	5
• भारतीय बाजार आतंकवाद जोखिम बीमा पूल.. एक नई यात्रा की शुरुआत	विद्या पी. भट	6-8
• निगम में सीएसआर गतिविधियाँ	नितेश भीमटे	8-11
• राजभाषा बैठक का आयोजन	डॉ. इन्दिरा	11-12
• निगम में प्रशिक्षण कार्यक्रम	रितिक खंदुजा	13-15
• ऐक्चुएरिअल लिगेसी पार्टनर पुरस्कार (जीसीए 2026)	शुभ आनंद	15-17
• कार्यालय में 77 वाँ गणतंत्र दिवस समारोह	सुजाता कांचन	18-20
• उदयपुर हिंदी सेमिनार	राजेश सिंह	20-22
• आरटीआई जागरूकता अभियान	शिखा भारद्वाज	23-24
• सतर्कता जागरूकता सप्ताह	हीना देवरे	25-27
• कार्मिक समाचार	मानव संसाधन विभाग	27
• गर्मियों में सेहत और तंदुरुस्ती के उपाय	डॉ. अनुराग पी. राऊळ	28-29
• सपनों की सड़क पर	अजीत बारला	30-33
• दरारों पर टेप	अर्पित सिंह सिसोदिया	33-36
• नशा - एक गहरी सामाजिक समस्या	आस्था उपाध्याय	37-39
• डिजिटल युग में मानवीय संवेदनाएँ	कार्तिक गहलोत	40-41
• वन सभ्यताओं की जड़...	शशि शर्मा	41-43
• निगम में गणतंत्र दिवस समारोह	कार्यालय सेवा विभाग	44
• वित्तीय विवरण	निगमीय संचार विभाग	45

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादन मंडल या कंपनी का सहमत होना जरूरी नहीं है।

यह अंक निगम की वेबसाइट www.gicre.in पर उपलब्ध है. आप अपनी प्रतिक्रियाएं rajbhasha@gicre.in पर भेज सकते हैं.

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से . . .

प्रिय साथियों,

हमारे निगम की गृह-पत्रिका 'क्षितिज' के माध्यम से आप सभी से रुबरु होकर प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका में हमारे निगम की तिमाही गतिविधियों के अलावा कार्मिकों द्वारा लिखित बीमा, पुनर्बीमा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि समसामयिक मुद्दों से संबंधित हिंदी के लेख प्रकाशित होना राजभाषा के प्रति उनकी रूचि को दर्शाता है। इस तरह यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन का महत्त्वपूर्ण सूत्रधार है।

इस दौर में दुनिया तकनीकी के रथ पर सवार है। यह दौर आशाओं और उम्मीदों का है तो चिंताओं और चुनौतियों का भी। तकनीकी का तीव्र विकास एक ही समय में उत्साह और चिंता दोनों भावनाओं को जन्म देता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) सारी सरहदों को तोड़कर मानवता को अज्ञात और अनसुलझे रहस्यों से परिचित कराती है। शायद अब तक असाध्य मान ली गयी समस्याओं को भी सुलझाने का प्रयास करेगी। शायद यह पक्ष इस प्रभावशाली तकनीकी के प्रति संशय और चिंता का कारण बनता है। मेरा आप सभी से आग्रह है कि हम तकनीकी विकास के प्रति तैयार रहें और इसे अपनी कार्यकुशलता में वृद्धि का एक अवसर समझे।

पुनर्बीमा व्यवसाय में डेटा विश्लेषण मायने रखता है, जिसके लिए एआई की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यह हमारी अंतर्दृष्टि को गहरा करती है और हमें दूरदर्शिता से लैस करती है। एआई अधिक कंप्यूटिंग शक्ति और अत्याधुनिक परिचालन प्रणालियों के माध्यम से डेटा विश्लेषण करती है जो जोखिम की समझ को बेहतर करती है और उत्पाद डिजाइन को अधिक परिष्कृत करती है। पुनर्बीमा व्यवसाय में जोखिमों को बेहतर ढंग से समझना, उनकी गति, सटीकता और संभावित पैटर्न को पहचानने में एआई उपयोगी साबित हो सकती है। एक पुनर्बीमा कंपनी होने के नाते यह हमारे लिए एक युगान्तरकारी क्षण है जो हमारे व्यवसाय को नई दिशा प्रदान करेगी।

भारत सरकार ने स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर अपने नागरिकों को बीमा प्रदान करने लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है – 'विकसित भारत और 2047 तक सभी के लिए बीमा।' इसके लिए बीमा वितरण, जोखिम जागरूकता, वित्तीय साक्षरता, उत्पाद डिजाइन, उत्पाद नवाचार, अनिवार्य बीमा, नीति परिवर्तन, बीमा मूल्य श्रृंखला का पुनर्गठन आदि पर कार्य करना इस लक्ष्य की दिशा तय करेगा। हमें इन सभी पक्षों को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना होगा।

विविधताओं को मद्देनजर रखते हुए नए उत्पादों को डिजाइन करने के बजाय, संभवतः हमें ऐड-ऑन की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। जिस प्रकार व्यक्तिगत चिकित्सा किसी व्यक्ति की आनुवंशिक बनावट, उसकी जैविक प्रोफ़ाइल, जीवनशैली और पर्यावरण के अनुरूप तैयार की जाती है, उसी प्रकार बीमा व्यवसाय में 'सटीक बीमा' (Precision Insurance) की आवश्यकता है। उत्पाद जो जोखिमों के प्रति किसी व्यक्ति के मौलिक दृष्टिकोण, उसकी मानसिक बनावट, जीवन शैली और पर्यावरण के अनुरूप हो।। संभवतः सूक्ष्म-बीमा उत्पाद इसका एक उदाहरण है जहाँ आवश्यकता और समाधान के बीच एक अच्छा मेल है। हमें नई संभावनाओं को तलाशने की आवश्यकता है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि जीआईसी री राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय बीमा उद्योग में निरंतर आगे बढ़ते हुए नई ऊँचाइयाँ हासिल करता रहेगा। मैं सभी हितधारकों, बॉर्ड सदस्यों, ग्राहकों, मध्यस्थों, सहकर्मियों के सहयोग और समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूँ और नई उपलब्धियाँ हासिल करने की शुभकामनाएँ देता हूँ।

● हितेश जोशी
कार्यकारी निदेशक
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)

संपादक की कलम से . . .

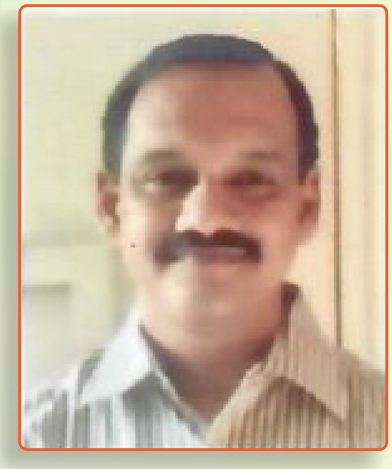

किसी भी संस्थान की वास्तविक पहचान केवल उसके कार्यों और उपलब्धियों से नहीं बनती, बल्कि उस संस्थान से जुड़े लोगों की सोच, संवेदनाओं और आपसी संवाद से भी निर्मित होती है। हमारी गृह पत्रिका 'क्षितिज' इसी संवाद का सशक्त माध्यम है। यह केवल सूचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि संस्थान की जीवंत संस्कृति, रचनात्मक ऊर्जा और सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब भी है।

हमारा निगम एक सरकारी उपक्रम होने के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व, कार्य संस्कृति और मानवीय मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए भी जाना जाता है। बदलते समय और बढ़ती चुनौतियों के बीच संस्थान तभी सशक्त बनता है, जब उसके कर्मचारी केवल अपने दायित्वों का निर्वहन ही न करें, बल्कि विचारों और अनुभवों के आदान-प्रदान में भी सक्रिय भागीदारी निभाएँ। यही भावना इस पत्रिका की आत्मा है।

इस अंक में विविध विषयों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। इसमें निगम की गतिविधियों, उपलब्धियों और महत्वपूर्ण आयोजनों के साथ-साथ कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचियों, रचनात्मक को भी स्थान दिया गया है। कविता, लेख, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत और विचारात्मक आलेख न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम हैं, बल्कि वे हमारे भीतर की संवेदनशीलता और चिंतनशीलता को भी सामने लाते हैं।

आज के तीव्र गति वाले जीवन में संवाद और आत्मीयता का महत्व और अधिक बढ़ गया है। तकनीक ने जहाँ कार्य को सरल बनाया है, वहीं मानवीय संबंधों में औपचारिकता भी बढ़ी है। ऐसे समय में 'क्षितिज' एक ऐसा मंच बन सकती है, जो हमें एक-दूसरे के अनुभवों, विचारों और रचनात्मकता से जोड़ने का कार्य करे। यह केवल पठन सामग्री नहीं, बल्कि संस्थान के प्रत्येक सदस्य के बीच एक भावनात्मक सेतु भी है।

हिंदी भाषा की समृद्धि और सरलता उसे जन-जन की भाषा बनाती है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिक दायित्व नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम भी है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हमारे निगम में हिंदी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार के प्रति निरंतर सकारात्मक वातावरण विकसित हो रहा है। कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता इस दिशा में अत्यंत प्रेरणादायक है।

अंत में, 'क्षितिज' के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं रचनाकारों के प्रति हार्दिक आभार। आशा है कि यह अंक पाठकों को ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और आत्मीय अनुभव प्रदान करेगा। भविष्य में भी आप सभी की रचनात्मक सहभागिता और सुझाव हमें इसी प्रकार प्राप्त होते रहेंगे, यही अपेक्षा है।

● चेतन शुक्ल
(मुख्य प्रबंधक, राजभाषा विभाग)

भारतीय बाजार आतंकवाद जोखिम बीमा पूल एक नई यात्रा की सफल शुरुआत - पहले सौदे की यादें

विद्या पी. भट
(सहायक महाप्रबंधक, निवेश प्रचालन)

नेगोशिएटेड डीलिंग सिस्टम - ऑर्डर मैचिंग (एनडीएस-ओएम) के माध्यम द्वारा भारतीय बाजार आतंकवाद जोखिम बीमा पूल निधियों से केंद्र सरकार प्रतिभूतियों में निवेश :

प्रथम सौदे की यात्रा एवं सारांश

भारतीय बाजार आतंकवाद जोखिम बीमा पूल की पृष्ठभूमि :

इंडियन मार्केट टेररिज्म रिस्क इंश्योरेंस पूल (आईएमटीआरआईपी), जो अप्रैल 2002 में स्थापित हुआ, देश की सभी गैर-जीवन बीमा कंपनियों का एक संयुक्त मंच है। इसका प्रबंधन भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआईसी री) करता है। यह पूल 11 सितम्बर 2001 हमलों के बाद आतंकवाद के जोखिम को कवर करने के लिए बीमा उद्योग द्वारा निर्मित एक विशेष तंत्र है, जो संपत्ति और अन्य व्यवसायों को सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे व्यवसाय, आतंकी हमले के बाद पुनः निर्माण में सक्षम हो पाते हैं।

इस पूल ने अब अपने सफल संचालन के 23 वर्ष पूरे कर लिए हैं और यह भारतीय बीमा कंपनियों को आतंकवाद के जोखिम को कवर करने के लिए स्वचालित क्षमता प्रदान करना जारी रखे हुए है।

भारत में कार्यरत गैर-जीवन बीमा कंपनियां इस पूल के सदस्य हैं। अभी पूल के सदस्य लगभग 25 हैं। इसमें जीआईसी री भी शामिल है।

यह पूल सदस्यों की संयुक्त अंडरराइटिंग क्षमता के आधार पर, भारत में आतंकवाद के जोखिम के विरुद्ध बीमा कवर प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

जीआईसी री की भूमिका :

एक पूल मैनेजर के तौर पर, जीआईसी री पूल के सभी कार्यों के प्रबंधन की ज़िम्मेदारी निभाता है। इसे सालाना आधार पर पूल के लिए पुनर्बीमा सुरक्षा की व्यवस्था करने की ज़िम्मेदारी भी सौंपी गई है।

पूल के सुचारू संचालन के लिए, सदस्यों ने निम्नलिखित दो समितियों का गठन किया है:

- पूल अंडरराइटिंग समिति
- पूल निवेश समिति

आतंकवाद जोखिम बीमा पूल निधियों का निवेश :

जीआईसी री, सभी भाग लेने वाली नॉन-लाइफ़ जनरल इंश्योरेंस कंपनियों की ओर से पूल निधि का प्रबंधन कर रही है। 19-03-2025 के पहले यह फ़ंड्स फिक्स्ड डिपॉज़िट, म्यूचुअल फ़ंड्स, बॉन्ड्स और डिबेंचर्स में निवेश हो रहे थे।

आईआरडीएआई और टेररिज्म पूल की इन्वेस्टमेंट कमिटी की सलाह पर, सरकारी [(केंद्रीय (सीजीएस) और राज्य (एसजीएस)] प्रतिभूतियों में निवेश के रास्ते तलाशे गए।

पूल के अपंजीकृत दर्जे के कारण, पहले यह संभव नहीं था। आरबीआई अधिकारियों के साथ बैठक हुई। उन्होंने एक नए मार्ग का सुझाव देकर हमारा मार्गदर्शन किया।

कार्य की प्रक्रिया :

हमारे वरिष्ठों के अनुकरणीय 'हर-कदम पर' मार्गदर्शन और सभी संबंधित टीमों के बीच व्यापक समन्वय के साथ, एक माध्यम की व्यवस्था की गई।

आतंकवाद पूल निधि को केंद्रीय और राज्य सरकार की प्रतिभूतियों में निवेश करने के उद्देश्य से, अभिरक्षक, स्टॉक होल्डिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के साथ एक घटकों का सहायक सामान्य खाता-बही [कन्स्टिट्युंअन्ट्स सब्सिडिअरि जनरल लेजर (सीएसजीएल)] खाता खोलने से जुड़ी औपचारिकताएँ सफलतापूर्वक पूरी कर ली गईं। यह सफलता निवेश प्रचालन, निवेश मध्य कार्यालय, निवेश बैक ऑफिस और

निवेश खाते अनुभाग की टीमों के बीच आपसी तालमेल, सहक्रियात्मक, समकालिकता और सहयोग का परिणाम था।

सभी औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद, सीसीएईएल ने आईएमटीआरआईपी के लिए नेगोशिएटेड डीलिंग सिस्टम - ऑर्डर मैचिंग (एनडीएस-ओएम) पर उपयोगकर्ता (यूजर) लॉगिन सक्रिय कर दिया।

एनडीएस-ओएम (नेगोशिएटेड डीलिंग सिस्टम - ऑर्डर मैचिंग) भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) द्वारा संचालित एक इलेक्ट्रॉनिक अनॉनिमस् ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म है। यह मुख्य रूप से बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए सरकारी प्रतिभूतियों के द्वितीयक बाज़ार में ऑनलाइन खरीद-बिक्री के लिए उपयोग किया जाता है ।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अधिकृत, क्लियरिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (सीसीआईएल) एक वित्तीय सेवा कंपनी है जो भारत के विभिन्न वित्तीय बाजारों के लिए क्लियरिंग और सेटलमेंट सेवाएँ प्रदान करती है, जिनमें प्रतिभूति, मुद्रा और मनी मार्केट शामिल हैं।

डिजिटल प्रगति :

इन प्रक्रियागत औपचारिकताओं के अंतिम चरणों के दौरान, क्वालिटी सर्वर में एसएपी टेस्टिंग साथ-साथ शुरू हो गई थी। कुछ परीक्षणों और गलतियों के बाद, एसएपी सपोर्ट टीम के निरंतर मार्गदर्शन से, एसएपी प्रोडक्शन सेटअप लाइव हो गया।

सार्थक सफलता :

श्रीमती राधिका रविशेखर, उप महाप्रबंधक और मुख्य निवेश अधिकारी (सीआईओ) द्वारा 19 मार्च 2025 को औपचारिक उद्घाटन के बाद, जीआईसी की ऋण टीम ने केंद्र सरकार की प्रतिभूतियाँ में निवेश का पहला ट्रेड शुरू किया। इसके तहत, उन्होंने 5 करोड़ रुपये (प्रीमियम को छोड़कर) का 7.10% जीएस 2034 का एक पेपर खरीदा और डील टिकट सफलतापूर्वक जेनरेट हो गया।

इस नए सफ़र की कहानी में, यह सफलता का शिखर था!!!

ऋण टीम के श्री संजय कुमार जांगिड़ और श्री जयेश तानाजी धानके

केंद्रीय सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश का पहला व्यापार सौदा एनडीएस-ओएम के माध्यम से 19-03-2025 को सुबह, लगभग 11.30 बजे, ओरिएंटल हाउस कार्यालय के ऋण डीलिंग रूम (डेट् डिलिंग रूम) से किया गया।

सावधानी के तौर पर, भारतीय बाजार आतंकवाद जोखिम बीमा पूल निधियों के निवेश के लिए एक समर्पित डेस्कटॉप आवंटित किया गया है।

वरिष्ठ अधिकारियों ने इन शानदार उपलब्धियों के लिए संबंधित टीमों को बधाई दी। उनकी सराहनापूर्ण शुभकामनाओं ने सभी टीमों का मनोबल बढ़ा दिया।

निवेश प्रचालन, निवेश मध्य कार्यालय, निवेश बैक ऑफिस और

निवेश खाते अनुभाग की टीमों के साथ, एनपीए सेल, भारतीय बाजार आतंकवाद जोखिम बीमा पूल के अधिकारी, लीगल डिपार्टमेंट और इंटरनल ऑडिट डिपार्टमेंट के टीम भी इस ऐतिहासिक उपलब्धि के साक्षी बनने के लिए खुशी-खुशी मौजूद थे।

इस महत्वपूर्ण अवसर को मनाने के लिए, उद्घाटन व्यापार के बाद एक 'हैप्पी स्नैक एंड टी पार्टी' का आयोजन किया गया।

संयोग की बात यह है कि 19.3.2025 को रंग पंचमी तिथि

थी और सही मायने में 'आतंकवाद पूल निवेश परिसंपत्तियों' (टेररिज़म् पूल इनवेस्टमेंट ऐसेट्स) के पोर्टफोलियो में और भी रंग जुड़ गए।

5 करोड़ रुपये के शुरुआती केंद्रीय सरकार की प्रतिभूतियों [सेंट्रल गवर्नमेंट सिक्युअरटिज् (सीजीएस)] निवेश से, 'आतंकवाद पूल निवेश परिसंपत्ति' 31.3.2026 तक 1777 करोड़ रुपये है। राज्य सरकार प्रतिभूतियों [स्टेट गवर्नमेंट सिक्युअरटिज् (एसजीएस)] में निवेश की शुरुआत 24.03.2025 से हुई थी। 31.3.2026 तक 3165 करोड़ रुपये है।

और भी होंगी हरियाली राहें, जिन्हें हम आजमाएंगे,

आशा है, निवेश के इस गुलदस्ते में और भी फूल सजाएँगे।

निगम में सीएसआर गतिविधियाँ...

1. स्वस्थ भविष्य की ओर सशक्त कदम

के.पी. सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल, सीतापुर में बहुविशेषज्ञ चिकित्सा सुविधाओं का शुभारंभ

नितेश भिमटे
(वरिष्ठ प्रबंधक)

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सशक्त रूप देते हुए जीआईसी री के सहयोग से के.पी. सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल, परसरारई, सीतापुर में 100 बिस्तरों वाले अस्पताल के विस्तार एवं उन्नयन के अंतर्गत

अत्याधुनिक बहुविशेषज्ञ चिकित्सा सुविधाओं का औपचारिक उद्घाटन 09 फरवरी 2026 को संपन्न हुआ। यह परियोजना सीतापुर एवं आसपास के क्षेत्रों में सुदृढ़, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की दिशा में एक निर्णायक और उल्लेखनीय उपलब्धि है।

इस अवसर पर जीआईसी री की ओर से श्री मुकेश वाघेला, उप महाप्रबंधक एवं श्री नितेश भिमटे, वरिष्ठ प्रबंधक ने अस्पताल का दौरा कर सीएसआर द्वारा समर्थित नई सुविधाओं का उद्घाटन एवं निरीक्षण किया। परियोजना साझेदार श्री पीताम्बरा शिक्षा समिति के सहयोग से विकसित ये सुविधाएं सीतापुर एवं आसपास के क्षेत्रों में आपातकालीन एवं विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं को नई गति देंगी।

नवीन चिकित्सा अवसंरचना का उद्घाटन

उद्घाटन के दौरान जिन प्रमुख सुविधाओं का अवलोकन किया गया, उनमें पूर्णतः सुसज्जित ब्लड बैंक का शुभारंभ विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। यह ब्लड बैंक गुणवत्तापूर्ण परीक्षण, सुरक्षित भंडारण एवं दाता स्क्रीनिंग की सभी आवश्यक मानकों

के अनुरूप स्थापित किया गया है, जिससे आपात स्थितियों में समय पर रक्त उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

इसके अतिरिक्त, उन्नत जीवनरक्षक सुविधाओं से युक्त एंबुलेंस का भी निरीक्षण किया गया, जो पहले से ही आपातकालीन सेवाओं एवं रोगी परिवहन के लिए सक्रिय है। आधुनिक चिकित्सा उपकरणों में सी आर्म मशीन की स्थापना ऑपरेशन थिएटर ब्लॉक में की गई है, जिससे ऑर्थोपेडिक, ट्रॉमा एवं सर्जिकल प्रक्रियाओं की सटीकता एवं सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार आएगा।

समुदाय के साथ स्वास्थ्य की साझेदारी

उद्घाटन कार्यक्रम के उपरांत सीएसआर टीम ने सेलुमऊ झारेखापुर बाजार (हर्गांव क्षेत्र) में आयोजित निःशुल्क मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर का भी दौरा किया। वर्षभर चलने वाली जीआईसी री की सामुदायिक स्वास्थ्य पहल के अंतर्गत आयोजित इस शिविर में कुल 817 मरीजों को ऑर्थोपेडिक्स, कार्डियोलॉजी एवं गायनेकोलॉजी सहित विभिन्न विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान की गईं। आवश्यकतानुसार मरीजों को सीएसआर पहल के अंतर्गत के.पी. सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल में निःशुल्क उपचार हेतु रेफर किया गया। दवाइयां एवं जांच सेवाएं भी पूर्णतः

निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं, जिससे स्थानीय समुदाय का व्यापक लाभ सुनिश्चित हुआ।

निरंतर सीएसआर स्वास्थ्य पहल

इस परियोजना के माध्यम से सीतापुर जनपद में वर्षभर नियमित स्वास्थ्य शिविर, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यशालाएं, निवारक जांच, तथा टीकाकरण एवं वैक्सीनेशन अभियान संचालित किए जा रहे हैं। स्वच्छता, पोषण, मातृ शिशु स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य एवं जीवनशैली संबंधी रोगों पर केंद्रित कार्यक्रम समुदाय में जनजागरूकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

सकारात्मक प्रभाव

उद्घाटन के अवसर पर यह स्पष्ट परिलक्षित हुआ कि सीएसआर के अंतर्गत स्थापित सुविधाएं जनसेवा के लिए पूर्णतः तैयार हैं। अस्पताल की आपात एवं शल्यचिकित्सा क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और दूरदराज़ क्षेत्रों के नागरिकों तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंच रही हैं।

यह पहल जीआईसी री की उस सोच का जीवंत उदाहरण है, जिसके केंद्र में समाज का समग्र स्वास्थ्य और सतत विकास है। के.पी. सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल में बहुविशेषज्ञ सुविधाओं का यह शुभारंभ न केवल वर्तमान की आवश्यकता है, बल्कि आने वाले वर्षों में स्वस्थ समाज की मजबूत नींव भी रखता है।

2. जन आरोग्यम के माध्यम से स्वस्थ समाज की ओर पहल

खोड़ा कॉलोनी, गाजियाबाद में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआईसी री) की सीएसआर प्रतिबद्धता के अंतर्गत “जन आरोग्यम सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम” के तहत 18 मार्च 2026 को खोड़ा कॉलोनी, गाजियाबाद में एक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का सफल

आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य शहरी एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तक सुलभ, निवारक एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचाना रहा।

बिस्नौली सर्वोदय ग्रामोद्योग सेवा संस्थान (बीएसजीएसएस) द्वारा आयोजित इस शिविर में विशेषज्ञ डॉक्टरों एवं तकनीकी स्टाफ की टीम ने 237 नागरिकों की स्वास्थ्य जांच की। शिविर में विशेष रूप से एनीमिया, मधुमेह और उच्च रक्तचाप की जांच पर ध्यान केंद्रित किया गया। रक्त परीक्षण, रक्तचाप, एवं ऑक्सीजन सैचुरेशन स्तर की जांच के साथ साथ लाभार्थियों को निःशुल्क दवाइयां, पोषण पूरक तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले किट भी वितरित किए गए।

इस अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से श्री अरुण दीक्षित, उप जिलाधिकारी (एसडीएम), गाजियाबाद तथा डॉ. राकेश गुप्ता, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी की उपस्थिति रही। जीआईसी री का प्रतिनिधित्व श्री मुकेश वाघेला, उप महाप्रबंधक एवं श्रीमती श्वेता मोगवीरा, सहायक महाप्रबंधक ने किया, जिन्होंने शिविर की व्यवस्थाओं का अवलोकन कर पहल की सराहना की।

कार्यक्रम के समन्वय में डॉ. कृपा शंकर गुप्ता (स्वास्थ्य सेवाएं सलाहकार), श्री जे.एन. राय (निदेशक–परियोजना), श्री अनुप कुमार (निदेशक–संचालन) तथा जन आरोग्यम टीम की भूमिका सराहनीय रही।

यह स्वास्थ्य शिविर जीआईसी री की उस सोच को साकार करता है, जिसके केंद्र में समाज के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सुरक्षा और जागरूकता पहुँचाना है। "आपत्काले रक्षिष्यामि" की भावना के साथ जीआईसी री निरंतर एक स्वस्थ और सशक्त भारत की दिशा में अग्रसर है।

राजभाषा बैठक का आयोजन – वाराणसी

डॉ. इन्दिरा
(उप प्रबंधक)

दिनांक 14 मार्च 2026 को हमारे कार्यालय के उच्च कार्यपालकों के लिए एक हिंदी कार्यशाला तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन वाराणसी के होटल ताज गंगेस में किया गया। इस बैठक में निगम के प्रधान कार्यालय तथा दिल्ली संपर्क कार्यालय के राजभाषा कामकाज की समीक्षा की गयी।

इस कार्यक्रम में निगम के कार्यकारी निदेशक तथा अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार), श्री हितेश जोशी; कार्यकारी निदेशक सुश्री जयश्री बालकृष्ण; राजभाषा समिति के सदस्य; कार्यशाला सहभागी उप महाप्रबंधकगण; प्रधान कार्यालय की राजभाषा टीम एवं दिल्ली के हिन्दी प्रतिनिधि उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत राजभाषा विभाग की सहायक महाप्रबंधक, सुश्री उज्ज्वला सकळकळे के स्वागत भाषण के साथ हुई। उन्होंने बैठक की कार्ययोजना की जानकारी देते हुए

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संरचना, बैठक करने की संवैधानिक अनिवार्यता, हिंदी कार्यशाला की उपयोगिता और सार्थकता आदि के बारे में जानकारी प्रदान की।

सर्वप्रथम अध्यक्ष एवं प्रधान निदेशक की अध्यक्षता में निगम की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि तथा तिमाही प्रगति पर चर्चा की गयी। निगम के हिंदी पत्राचार की संतोषजनक स्थिति की सराहाना की गयी। निगम के अधिकारियों को कंप्यूटर पर हिंदी में कामकाज के लिए आईटी टूल्स आधारित हिंदी कार्यशाला देने की जानकारी दी गयी तथा शेष अधिकारियों को जल्द से जल्द हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षण देने की योजना से अवगत कराया गया। बैठक में समिति सदस्यों ने हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं, इस पर विचार-विमर्श किया गया।

इस क्रम में अगली प्रस्तुती दिल्ली संपर्क कार्यालय की रही। दिल्ली कार्यालय से सुश्री अनुश्री आनंद द्वारा पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुती दी गयी। उन्होंने दिल्ली संपर्क कार्यालय में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित प्रयासों के बारे में जानकारी प्रदान की। दिल्ली कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों के साथ-साथ दिल्ली कार्यालय की संरचना और अन्य कार्यों के बारे में भी जानकारी दी। गत वर्ष संसदीय समिति द्वारा किए गए राजभाषा निरीक्षण के दौरान दिल्ली कार्यालय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।

राभाकास बैठक के पश्चात् कार्यक्रम में उपस्थित सभी सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राजभाषा नियम तथा अधिनियम के प्रति जागरूकता के साथ-कंप्यूटर पर विभिन्न आईटी टूल्स पर प्रशिक्षण दिया गया। भारत सरकार द्वारा विकसित विभिन्न आईटी टूल्स के बारे में जानकारी दी गयी। इन आईटी टूल्स के प्रयोग को वास्तविक रूप से उपयोग करते हुए समझाया गया जिनके माध्यम से तकनीकी दौर में भी भारत सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना आसान हो सकता है। इस कार्यशाला का व्याख्यान उप निदेशक पद से सेवानिवृत्त श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा द्वारा प्रदान किया गया। कार्यशाला के सभी सहभागी सदस्यों द्वारा इसकी सराहना की गयी।

उल्लेखित प्रस्तुतियों के पश्चात् राजभाषा विभाग के महाप्रबंधक महोदय श्री राजेश खडतरे द्वारा समीक्षा की गयी। उन्होंने राजभाषा विभाग के कार्यों को संतोषजनक बताया और भविष्य में इसी दिशा में अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने राजभाषा विभाग के सीमित संख्याबल होते हुए भी उत्कृष्ट कार्य करने की प्रशंसा की।

दोनों कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन पर संतोष व्यक्त करने हुए कार्यकारी निदेशक तथा अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार), श्री हितेश जोशी द्वारा सराहना व्यक्त की गयी। उन्होंने कहा कि जीआईसी री अपने कोर बिजनेस की अपेक्षाओं को पूरा करते हुए हिंदी कार्यान्वयन के कार्य को भी बखूबी निभा रहा है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देना संवैधानिक कर्तव्य के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारी भी है।

अंत में राजभाषा विभाग के मुख्य प्रबंधक श्री चेतन शुक्ल ने राजभाषा विभाग की इस बैठक को कार्यालय से बाहर आयोजित करने के लिए उच्च प्रबंधन को धन्यवाद दिया तथा बैठक की सफलता के लिए अपनी टीम का प्रोत्साहन करते हुए हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस राजभाषा बैठक की समाप्ति की घोषणा की।

इस कार्यक्रम का सूत्र संचालन डॉ. इन्दिरा, उप प्रबंधक द्वारा किया गया।

(तस्वीरें कवर पृष्ठ 2 पर)

निगम में प्रशिक्षण गतिविधियाँ

तकनीकी, कार्यात्मक, सुशासन एवं व्यवहारिक प्रशिक्षणों के माध्यम से क्षमता निर्माण

रितिक खंदुजा
(सहायक प्रबंधक)

वित्त वर्ष 2025–26 की अंतिम तिमाही (जनवरी–मार्च 2026) के दौरान लर्निंग एंड डेवलपमेंट प्रभाग द्वारा अधिकारियों एवं कार्मिकों की तकनीकी दक्षता, प्रबंधकीय क्षमता, नियामकीय अनुपालन तथा व्यवहारिक कौशल को सुदृढ़ करने हेतु विविध प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस तिमाही में ऑफलाइन, ऑनलाइन एवं वेब-आधारित माध्यमों से व्यापक प्रशिक्षण गतिविधियाँ संपन्न हुईं, जिनमें बीमा एवं पुनर्बीमा, वित्त, जोखिम प्रबंधन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), सॉफ्ट स्किल्स, नेतृत्व विकास, सेवा नियम तथा मानव अधिकार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को समाहित किया गया।

प्रमुख प्रशिक्षण कार्यक्रम :

तिमाही की शुरुआत वरिष्ठ एवं सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों हेतु कार्यक्रमों से हुई। सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों के लिए कार्यक्रम (08 से 10 जनवरी 2026 तथा 16 से 18 मार्च 2026) का आयोजन एनआईए, पुणे में किया गया, जिससे प्रतिभागियों को सेवा के उपरांत जीवन, वित्तीय योजना एवं भावनात्मक तैयारी से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

नव नियुक्त अधिकारियों के लिए आगमन प्रशिक्षण (बैच II) का आयोजन 19–30 जनवरी 2026 को इंश्योरेंस इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया (आईआईआई), बीकेसी में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अधिकारियों ने भाग लिया, जिन्हें संगठनात्मक संरचना, बीमा परिचालन, नियामकीय ढाँचा एवं कार्य-संस्कृति की समग्र समझ प्रदान की गई।

वित्तीय एवं तकनीकी क्षमता निर्माण :

वित्तीय जागरूकता को सुदृढ़ करने हेतु 'फाइनेंस फॉर नॉन फाइनेंस इग्जेक्यटिव्ज' (02 – 06 फरवरी 2026) प्रशिक्षण एनपीसी द्वारा कॉडैकानल में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम से अधिकारियों को वित्तीय विवरणों, बजटिंग, लागत विश्लेषण एवं निर्णय निर्माण में वित्तीय दृष्टिकोण विकसित करने

में सहायता मिली।

बीमा क्षेत्र से संबंधित उन्नत तकनीकी प्रशिक्षणों के अंतर्गत:

- **एंडरप्राइज रिस्क मैनेजमेंट (गैर जीवन)** (18–20 फरवरी 2026) – एनआईए, पुणे
- **कृषि बीमा कार्यक्रम (गैर जीवन)** (02–06 फरवरी 2026) – एनआईए, पुणे

इन कार्यक्रमों से जोखिम पहचान, मूल्यांकन, नियंत्रण तथा कृषि बीमा की परिचालन जटिलताओं पर प्रतिभागियों की समझ में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

बीमा, पुनर्बीमा एवं ऐक्चुअरिअल ज्ञान :

पुनर्बीमा में डिप्लोमा (29 नवंबर 2025 – 28 फरवरी 2026) ऑनलाइन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के माध्यम से पुनर्बीमा संरचनाओं, अंडरराइटिंग, क्लेम्स एवं अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं पर गहन ज्ञान अर्जित किया गया।

इसके अतिरिक्त, ऐक्चुअरीज़ के 25 वें वैश्विक सम्मेलन (22–24 फरवरी 2026) का आयोजन मुंबई स्थित जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को वैश्विक ऐक्चुअरिअल प्रवृत्तियों, जोखिम मॉडलिंग एवं भविष्य की चुनौतियों से अवगत कराया गया।

डिजिटल, एआई एवं नवाचार आधारित प्रशिक्षण :

तकनीक-आधारित योग्यता के विकास हेतु:

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्रौद्योगिकी की सहायता से जीवन/स्वास्थ्य बीमा के अंडरराइटिंग और दावों में सुधार करने के विषय पर वेबिनार/ऑनलाइन प्रशिक्षण
- वित्त क्षेत्र में एआई का प्रभावी उपयोग – एनएएचआरडी, अमृतसर

इन कार्यक्रमों ने प्रतिभागियों को अंडरराइटिंग, क्लेम्स प्रोसेसिंग एवं वित्तीय विश्लेषण में एआई एवं डिजिटल टूल्स के व्यावहारिक अनुप्रयोग से परिचित कराया।

व्यवहारिक, नेतृत्व एवं व्यक्तिगत विकास :

कार्यस्थल पर प्रभावी संवाद एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए:

- **सॉफ्ट स्किल्स का प्रशिक्षण कार्यक्रम** (25–27 फरवरी 2026) – आईआईआई, बीकेसी
- **कार्य-जीवन संतुलन और नेतृत्व विकास** (22–25 फरवरी 2026) – एनएएचआरडी, अमृतसर

इन कार्यक्रमों से प्रतिभागियों की संप्रेषण क्षमता, टीमवर्क, नेतृत्व गुण एवं कार्य जीवन संतुलन में सुधार हुआ।

सुशासन, नैतिकता एवं अनुपालन :

संगठन में सुरक्षित एवं उत्तरदायी कार्य संस्कृति को सुदृढ़ करने हेतु:

- पीओएसएच अधिनियम प्रशिक्षण – ऑनलाइन (213 कर्मचारी), बाह्य संकाय सुश्री रूटा पंडित द्वारा व्याख्यान दिया गया।
- मानव अधिकार प्रशिक्षण – ऑनलाइन (205 कर्मचारी), आंतरिक संकाय सुश्री शिखा भारद्वाज, सहायक प्रबंधक द्वारा व्याख्यान दिया गया।

इन प्रशिक्षणों ने कर्मचारियों में लैंगिक समानता, सम्मानजनक कार्यस्थल एवं मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

मुख्य अवलोकन :

- नव नियुक्त अधिकारियों का व्यापक इंडक्शन एवं क्षमता निर्माण
- बीमा, पुनर्बीमा एवं जोखिम प्रबंधन में तकनीकी दक्षता का सुदृढ़ीकरण
- एआई, डिजिटल टूल्स एवं आधुनिक तकनीकों पर विशेष बल
- व्यवहारिक, नेतृत्व एवं नैतिक प्रशिक्षण के माध्यम से समग्र विकास
- ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों का प्रभावी उपयोग

निष्कर्ष

जनवरी–मार्च 2026 की तिमाही के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम संगठन की निरंतर अधिगम, व्यावसायिक उत्कृष्टता एवं सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। इन प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से कर्मचारियों की तकनीकी, प्रबंधकीय एवं व्यवहारिक क्षमताओं में समग्र वृद्धि हुई है, जिससे वे बदलते बीमा एवं पुनर्बीमा परिवेश की चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना करने में सक्षम होंगे।

वरिष्ठ प्रबंधन के सतत सहयोग से लर्निंग एंड डेवलपमेंट प्रभाग भविष्य में भी एक कुशल, जागरूक और भविष्य सज्जित कार्यबल के निर्माण हेतु तत्पर है।

ऐक्चुएरिअल लिगेसी पार्टनर पुरस्कार' : जीसीए 2026 में जीआईसी का गौरव

शुभ आनंद
(सहायक प्रबंधक)

जीसीए (ग्लोबल कॉन्फ्रेंस ऑफ एक्चुअरी) 2026 का एक अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण वह रहा, जब भारतीय साधारण बीमा

निगम (जीआईसी) को भारतीय ऐक्चुअरी संस्थान के साथ 18 वर्षों की निरंतर एवं सुदृढ़ साझेदारी के लिए 'लिगेसी पार्टनर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान न केवल जीआईसी की मूल्य-आधारित कार्यसंस्कृति

को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि भारतीय पुनर्बीमा उद्योग के विकास में उसकी दीर्घकालिक एवं सक्रिय भूमिका को भी रेखांकित करता है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री हितेश जोशी का प्रभावशाली संबोधन:

जीआईसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री हितेश जोशी ने सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण सत्र को संबोधित किया। उनका संबोधन सम्मेलन के प्रमुख आकर्षणों में सम्मिलित रहा। अपने विचारोत्तेजक वक्तव्य में उन्होंने पुनर्बीमा क्षेत्र में ऐक्चुअरी विशेषज्ञों की बदलती, बढ़ती तथा अत्यंत रणनीतिक भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, जटिल जोखिम संरचनाएँ, वैश्विक बाजारों में तीव्र परिवर्तन, तथा

आँकड़ा-आधारित मॉडलिंग जैसे कारकों के मध्य ऐक्चुअरी विशेषज्ञ उद्योग के लिए मार्गदर्शक के रूप में उभर रहे हैं।

जीआईसी की सशक्त उपस्थिति

इस वर्ष जीसीए में जीआईसी की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।

संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ जीवन एवं गैर-जीवन—दोनों ही ऐक्चुअरी टीमों के सभी सदस्यों की सक्रिय

उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा को और अधिक बढ़ाया।

इस व्यापक सहभागिता ने न केवल ज्ञान-विनिमय को सुदृढ़ किया, बल्कि जीआईसी की सामूहिक कार्यसंस्कृति और सहयोगात्मक दृष्टिकोण को भी उजागर किया।

जीआईसी की पहली प्रदर्शनी गतिविधि — 700 से अधिक सहभागिता

जीसीए 2026 में जीआईसी द्वारा पहली बार आयोजित प्रदर्शनी गतिविधि सम्मेलन का एक प्रमुख आकर्षण रही, जिसने पूरे वातावरण में उत्साह और नवीन ऊर्जा का संचार किया।

रोचक खेल एवं ऐक्चुअरी प्रश्नोत्तरी

प्रदर्शनी स्थल पर आयोजित गतिविधियों में सम्मिलित थे:

- रोचक पासा-आधारित खेल
- ऐक्चुअरी प्रश्नोत्तरी (सैद्धांतिक एवं संख्यात्मक प्रश्नों सहित)

इन गतिविधियों ने प्रतिभागियों को ज्ञानवर्धन के साथ-साथ मनोरंजन का भी अवसर प्रदान किया।

आकर्षक उपहार

विजेताओं को विभिन्न आकर्षक उपहार प्रदान किए गए, जैसे- कॉफी मग, डायरी, बोतलें, चाबी के छल्ले आदि। साथ ही, सभी प्रतिभागियों को चॉकलेट भेंट की गई, जिसे सभी ने अत्यंत सराहा।

700 से अधिक सहभागिता — एक उल्लेखनीय उपलब्धि

जीआईसी के स्टॉल पर 700 से अधिक सहभागिता दर्ज की गई, जो इस पहल की उल्लेखनीय सफलता का प्रमाण है।

इससे न केवल जीआईसी की ब्रांड उपस्थिति सुदृढ़ हुई, बल्कि विभिन्न कंपनियों के ऐक्चुअरी पेशेवरों के साथ संवाद स्थापित करने का उत्कृष्ट अवसर भी प्राप्त हुआ।

उद्योग विशेषज्ञों से सार्थक संवाद

इस अवसर पर प्रतिभागियों के साथ उद्योग के नवीन रुझानों, चुनौतियों, मॉडलिंग पद्धतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर सार्थक एवं विचारोत्तेजक चर्चाएँ हुईं।

इन संवादों ने जीआईसी की उपस्थिति को और अधिक प्रभावशाली तथा मूल्यवान बनाया।

समापन

जीसीए 2026, जीआईसी के लिए एक स्मरणीय एवं गौरवशाली अनुभव सिद्ध हुआ, जहाँ सम्मान, ज्ञान, सहभागिता और उद्योग संवाद का अद्भुत संगम देखने को मिला।

इस आयोजन ने पुनः यह सिद्ध किया कि जीआईसी न केवल भारतीय पुनर्बीमा उद्योग का एक सुदृढ़ स्तंभ है, बल्कि वैश्विक मंच पर भी अपनी सशक्त पहचान और नेतृत्व बनाए हुए है।

कार्यालय में 77 वाँ गणतंत्र दिवस समारोह

सुजाता कांचन
(वरिष्ठ प्रबंधक)

"भारत हमको जान से प्यारा है ... सबसे न्यारा गुलिस्ताँ हमारा है .. 77 वें गणतंत्र दिवस की सुबह की शुरूवत इस गाने से हुई। कही दूर से मुझे एक के बाद एक देशभक्ति के कई गाने सुनाई दे रही थी। हर साल मैं सोचती रही हूँ कि कम से कम एक बार मुझे अपने कार्यालय में मनाए जाने वाले स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस में शामिल होना चाहिए। लेकिन मैं अब तक इसमें कामयाब नहीं हो पायी थी।

लेकिन इस वर्ष मैंने ठान लिया कि मैं कार्यालय के गणतंत्र दिवस में शामिल होकर रहूँगी। इस बार जब से मेरा रिटायरमेंट नज़दीक आने वाला है.. और सिर्फ गणतंत्र दिवस ही बचा है जिसके माध्यम से मैं शामिल हो सकती हूं, इसलिए मैंने सोचा कि मैं इस मौके को नहीं छोड़ूंगी। सोमवार, 26 जनवरी, 2026 में भारत का 77 वाँ गणतन्त्र दिवस मनाया जा रहा था। गणतन्त्र दिवस भारत गणराज्य का एक प्रमुख राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है क्योंकि वर्ष 1950 में इसी दिन भारत का संविधान लागू हुआ था। यह दिन भारत के नागरिकों को अपने संवैधानिक अधिकारों और कर्तव्यों को याद दिलाने का दिन है और यह न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों और भी मजबूत करता है। इस दिन भारत के हर कोने में ध्वज वंदन होता है और तिरंगा फैलता हुआ नज़र आता है।

इसीलिए, इस बार मैंने ऑफिस के गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने का निर्णय लिया। मैं सुबह जल्दी उठ कर 8.00 बजे तक ऑफिस पहुंचने के लिए तैयार हो गयी। ध्वजारोहण का समय 9.00 बजे का था। जब भी सार्वजनिक छुट्टी आती है तो बहुत से लोग या तो घर पर रहना पसंद करते हैं, क्योंकि गणतंत्र दिवस सर्दियों के मौसम में आता है। यदि यह शनिवार - रविवार के साथ जुड़कर आता है तो लोग अपने परिवार के साथ मौसम का आनंद लेने के लिए घूमने के लिए निकल पड़ते है। इसीलिए शायद सड़कें पूरी तरह से खाली थीं, कोई यातायात नहीं था। सड़क पर स्कूली बच्चों और शिक्षकों के अलावा और मेरे जैसे कुछ सरकारी कार्यालय के कर्मचारी जो गणतंत्र दिवस में शामिल होने के लिए जा रहे थे, वही नजर आ रहे थे। सड़क पर हर जगह हमारे तिरंगे से जुड़ते हुए कपड़े पहने हुए लोग दिखे, तो कहीं कोई कागज़ से बने तिरंगे बेच रहे थे। हर जगह देशभक्ति के गाने तेज आवाज में गूंज रहे थे।

जनवरी महीने में गणतंत्र दिवस को छोड़कर, नए साल का जशन, संक्रांति, वसंत पंचमी, पोंगल आदि कई उत्सव हम कार्यलय में मनाते हैं। इस महीने में मौसम ठंडा और बहुत अच्छा रहता है। गणतंत्र दिवस के दिन, रास्ते में सुबह का नज़ारा इतना खूबसूरत होगा मुझे इसका जरा सा भी अंदाजा नही था। हर तरफ तिरंगा ही तिरंगा दिखाई पड़ता था। रास्ता पूरा खाली था, कम ट्रैफिक आदि। हर तरफ इमारतों, स्कूलों, मंदिर, पेड़ पौधों को तिरंगे के रंगो की रोशनी से सजा दिया था। तिरंगे के रंगो की पाताकों की सजावट और देश भक्ति के गानों के साथ-साथ स्कूल कॉलेज के बच्चे तिरंगे को अपने हाथों से लहराते हुए नज़र आये। ये नज़ारा देखने लायक था।

स्कूलों, कॉलेजों, कार्यालय आदि मे कई तरह के कार्यक्रम

आयोजित किए जाते हैं । मेरे कार्यालय में भी गणतंत्र दिवस का जश्न, देशभक्ति, एकता और संवैधानिक मूल्यों के सम्मान के साथ मनाया जाता है। मुख्य गतिविधियों में तिरंगा फहराना, राष्ट्रगान, देशभक्ति गीत और पूरे ऑफिस को तिरंगे के रंगों में सजाना शामिल है। सुबह वरिष्ठ अधिकारियों या किसी सम्मानित कर्मचारी द्वारा ध्वजारोहण किया जाता है। कर्मचारी देशभक्ति थीम पर कपड़े पहनते है। नाश्ते में तिरंगे के रंग (केसरिया, सफेद, हरा) वाली मिठाइयां या स्नैक्स दिया जाता है।

मैं और मेरे ऑफिस के सहकर्मी थोड़ी जल्दी ही ऑफिस पहुंच गए। हमारे कार्यालय को पूरी तरह से छोटे-छोटे तिरंगे की रंग की रोशनी से सजाया गया था। कार्यालय रात में बहुत खूबसूरत लग रहा था। हमारे स्टाफ ने कार्यालय परिसर में सजावट फूलों,बालून के साथ बहुत ही सुंदर तरीके से की थी। साथ ही साथ, देश भक्ति के गीत भी चल रहे थे। उस दिन हमारे ऑफिस की कुर्सियां भी झंडे से मेल खा रही थीं।

हमारे कार्यालय की छत पर ध्वजारोहण किया जा रहा था। हम सब वहां इकट्ठे हुए। छत को साफ़ कर दिया गया था। ध्वज के चारों ओर सुंदर रंगीन फूलों की सजावट की गयी थी। हमारे कार्यालय के सुरक्षा कर्मचारी भी अपनी वर्दी में ड्रिल कर रहे थे। ध्वजारोहण श्री हितेश जोशी, हमारे कार्यकारी निदेशक-सीएमडी (अतिरिक्त प्रभार) के द्वारा किया गया और इसमें कार्यकारी निदेशक, महाप्रबंधक, सहायक महाप्रबंधक और कई अन्य अधिकारी भी शामिल थे। ध्वजारोहण के बाद ध्वज हवा में लहराने लगा। देख कर बड़ा अच्छा लगा। ध्वजारोहण के बाद सभी कर्मचारियों ने मिलकर राष्ट्रगान गाया। 26 जनवरी के पावन अवसर पर अधिकारियों ने बहुत ही विचारशील भाषण दिए गए ।

सभी कार्यपालकों ने अच्छे कार्यों के लिए कार्यालय सेवाएं विभाग की खूब सराहना की । सफाई कर्मचारियों को उनके ईमानदार, मेहनती और अच्छे कामों के लिए प्रमाण पत्र और पुरस्कार भी दिया गया, जिसकी व्यवस्था हमारे कार्यालय सेवा विभाग द्वारा की गई थी। मैंने भी 2 सहकार्मिकों के साथ मिलकर अपने पसंदीदा दो देशभक्ति गीत गाए। देशभक्ति के गीत गाते समय मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा था। उसके बाद अधिकारियों, सुरक्षाकर्मियों, सफाई कर्मचारी और ड्राइवरों के साथ समूह तस्वीरें भी ली गईं। फिर नागपुर नारंगी बर्फी बांटी गई जो तिरंगे के रंग के समान थी। उसके बाद सभी को चाय

नाश्ता बांटा गया। अंत में कार्यालय सेवा विभाग के सहायक महाप्रबंधक ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया ।

आखिरकार इस गणतंत्र दिवस पर ऑफिस के अंदर और बाहर मेरा बहुत अच्छा अनुभव रहा। मेरे मन में यह एक बहुत ही अद्भुत स्मृति बन गयी। मुझे लगता है कि हर किसी को कम से कम एक बार तो कार्यालय में ऐसे अवसरों में भाग लेने की कोशिश करनी चाहिए। यह दिन हमें एकता, अनुशासन और देश के प्रति अपने कर्तव्यों की याद दिलाता है।

उदयपुर हिंदी सेमिनार (09–10 अप्रैल 2026) : एक अनुभवात्मक प्रतिवेदन

राजेश सिंह
(सहायक प्रबंधक)

उदयपुर—झीलों की नगरी—जितनी सुहावनी है, उतनी ही मनमोहक भी। पहाड़ों के मध्य बसा यह रमणीय नगर मानो झीलों की गोद में पला बढ़ा हो। यहाँ की प्राकृतिक छटा मन को अचंभित कर देती है और एक स्वर्गिक अनुभूति प्रदान करती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह स्थान इस लोक का न होकर किसी अलौकिक लोक में स्थित हो।

मैं, राजेश सिंह, स्वयं को अत्यंत गौरान्वित अनुभव करता हूँ कि मुझे भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआईसी री) की ओर से वित्तीय सेवाएं विभाग (DFS) के तत्वावधान में बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा आयोजित दो दिवसीय हिंदी सेमिनार (09 से 10 अप्रैल 2026) में श्री चेतन शुक्ल, मुख्य प्रबंधक के साथ भाग लेने हेतु नामित किया गया। यह हमारे लिए विशेष सौभाग्य का विषय रहा कि हमें न केवल अपने प्रतिष्ठित संस्थान का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ, बल्कि झीलों की नगरी उदयपुर

के अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य को भी निकट से अनुभव करने का अवसर मिला।

इस प्रकार के सेमिनार किसी भी संस्था के सर्वांगीण विकास एवं सशक्तीकरण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न संस्थानों में संचालित नवोन्मेषी कार्यों को जानने समझने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे प्रेरणा लेकर उन्हें अपने कार्यालयों में लागू किया जा सकता है तथा कार्य प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। साथ ही, ये मंच व्यक्तित्व निखारने, वाक् कौशल को प्रखर करने, नवीन विषयों के अध्ययन और विद्वानजनों से संवाद एवं ज्ञानार्जन के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

इस सेमिनार में कुल 22 बैंकों तथा 7 बीमा कंपनियों की सहभागिता रही। प्रथम दिन, दिनांक 09.04.2026 (गुरुवार) को सर्वप्रथम मंचासीन कार्यपालकों एवं विभिन्न संस्थानों के प्रमुखों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम

का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात डॉ. श्री कृष्ण जुगनु, वरिष्ठ साहित्यकार, उदयपुर द्वारा हिंदी के साथ साथ अन्य भारतीय भाषाओं के महत्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भाषा की प्रासंगिकता पर सारगर्भित संबोधन दिया गया। तत्पश्चात सांख्यिकी

सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी महोदय के प्रेरणादायी संबोधन के साथ कार्यक्रम औपचारिक रूप से आगे बढ़ा।

सेमिनार के प्रथम दिवस (09 अप्रैल 2026) को बैंकिंग संस्थानों द्वारा पीपीटी प्रस्तुतियों के माध्यम से उनके कार्यों, अनुभवों एवं नवाचारों को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। वहीं द्वितीय दिवस (10 अप्रैल 2026) को बीमा एवं पुनर्बीमा संस्थानों की प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं। इसी दिन श्री शिखर प्रजापति, प्रख्यात मोटिवेशनल स्पीकर एवं कॉर्पोरेट ट्रेनर द्वारा कुशल नेतृत्व एवं टीम निर्माण विषय पर अत्यंत प्रेरक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, जिसने प्रतिभागियों को विशेष रूप से लाभान्वित किया।

जीआईसी री की प्रस्तुति

भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआईसी री) को द्वितीय दिवस

के पंचम सत्र में पीपीटी के माध्यम से अपने नवोन्मेषी कार्यों को सभी सहभागी संस्थानों एवं गणमान्य प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ। सत्र का शुभारंभ माननीय श्री चेतन शुक्ल, मुख्य प्रबंधक द्वारा "भारतीय साधारण बीमा निगम : कार्य, उपलब्धियाँ एवं राजभाषा हिंदी" विषय पर किया गया। उन्होंने निम्नलिखित पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला—

- निगम का परिचय एवं आधार
- निगम के प्रमुख कार्य

- वैश्विक उपस्थिति एवं अंतरराष्ट्रीय दायित्व
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सेवाएँ
- वित्तीय मजबूती एवं रणनीतिक उपलब्धियाँ

इसके पश्चात राजेश सिंह द्वारा "राजभाषा हिंदी : कार्यान्वयन एवं भविष्य" विषय पर प्रस्तुति दी गई, जिसमें जीआईसी री में राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाने हेतु किए जा रहे नवोन्मेषी प्रयासों की जानकारी साझा की गई। प्रस्तुति के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित रहे—

1. जीआईसी री एक पुनर्बीमा कंपनी है, जिसका अधिकांश व्यावसायिक कार्य विदेशों से संबंधित है; इसके बावजूद निगम की वेबसाइट पर अंग्रेज़ी, फ्रेंच, डच एवं जापानी भाषाओं के साथ राजभाषा हिंदी को अग्रणी स्थान प्रदान किया गया है।
2. निगम का डिजिटल हस्ताक्षर, जो पूर्व में केवल अंग्रेज़ी में उपलब्ध था, को आईटीएमजी विभाग के सहयोग से शत प्रतिशत द्विभाषी बनाया गया है।
3. देश विदेश में ई मेल के साथ प्रेषित किया जाने वाला परिचय पत्र (बारकोड प्रारूप) पूर्णतः द्विभाषी है, जिसमें हिंदी को प्राथमिकता दी गई है।
4. निगम के विभिन्न विभागों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट अब माइक्रोसॉफ्ट फॉर्म्स के माध्यम से संकलित की जाती है तथा पावर ऑटोमेशन के माध्यम से त्रि स्तरीय जांच के उपरांत राजभाषा विभाग को प्राप्त होती है।
5. वर्तमान में निगम में अनुवाद कार्य केवल राजभाषा विभाग तक सीमित न रहकर सभी विभागों की सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है। यह साहसिक एवं सराहनीय पहल माननीय महाप्रबंधक श्री राजेश खडतरे के मार्गदर्शन एवं सहयोग से संभव हो सकी है। इस संदर्भ में श्री धीरज भास्कर, उप सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग, ने भारतीय साधारण बीमा निगम द्वारा अपनाई गई इस पहल की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए अन्य सभी संस्थानों से भी इस प्रकार के नवोन्मेषी उपायों को अपने अपने संस्थानों में लागू करने का आह्वान किया है।

अन्य सत्र एवं नवाचार :

इसके उपरांत श्री धर्मबीर, उप निदेशक (राजभाषा), वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा संसदीय राजभाषा समिति की संशोधित प्रश्नावली, सामान्य त्रुटियाँ, उनके समाधान तथा राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु माननीय संसदीय समिति के निदेशों/सुझावों पर उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के समापन सत्र में श्री धीरज भास्कर, उप सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग ने अपने संबोधन में इस बात पर विशेष बल दिया कि जो संस्थान नवोन्मेषी एवं लाभप्रद कार्य कर रहे हैं, उन्हें अन्य संस्थानों द्वारा भी अपनाया जाना चाहिए तथा राजभाषा हिंदी को एक सशक्त भाषाई सेतु के रूप में विकसित करने में सभी को सहयोग प्रदान करना चाहिए।

सेमिनार के दौरान विभिन्न संस्थानों में कार्यान्वित कुछ उल्लेखनीय नवाचारों की जानकारी भी प्राप्त हुई, जिनमें प्रमुख हैं—

1. प्रतिदिन के सुविचार को हिंदी शब्द सिंधु से जोड़ना।
2. निगम की वेबसाइट को कंठस्थ 2.0 से जोड़कर अनुवाद प्रक्रिया को सरल एवं पारदर्शी बनाना।
3. वेबसाइट को राजभाषा हिंदी के साथ साथ संविधान में उल्लिखित 22 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना।

4. तिमाही रिपोर्ट हेतु निगम की वेबसाइट को ई ऑफिस प्रणाली से जोड़कर पारदर्शिता एवं सुगमता सुनिश्चित करना।
5. अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।

निष्कर्षतः, यह दो दिवसीय हिंदी सेमिनार न केवल राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को प्रोत्साहित करने वाला सिद्ध हुआ, बल्कि विभिन्न संस्थानों के मध्य अनुभवों के आदान प्रदान, नवाचारों के प्रसार तथा कार्य संस्कृति को सुदृढ़ बनाने का एक अत्यंत सार्थक मंच भी साबित हुआ।

सहायक कर्मचारियों के लिए आरटीआई जागरूकता अभियान

शिखा भारद्वाज
(सहायक प्रबंधक)

पारदर्शिता को बढ़ावा देने और सूचना के अभाव को दूर करने की पहल के तहत, जीआईसी री की आरटीआई टीम ने हाल ही में "सुरक्षा" कार्यालय के अधिकारी कैंटीन में एक विशेष आरटीआई (सूचना का अधिकार) जागरूकता अभियान का आयोजन किया।

कार्यालय सहायकों और सहयोगी कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए इस सत्र का उद्देश्य आरटीआई अधिनियम को सरल भाषा में समझाना और संगठन के प्रत्येक सदस्य को उनके नागरिक अधिकारों के बारे में जानकारी प्रदान करना था।

सशक्तिकरण के लिए सुलभता को महत्वपूर्ण मानते हुए, टीम ने भाषा संबंधी किसी भी बाधा को दूर करने का पूरा ध्यान रखा। सत्र शुरू होने से पहले, इस लेख के साथ संलग्न जानकारीपूर्ण पुस्तिकाएँ हिंदी, अंग्रेजी और मराठी में वितरित की गईं, जो सभी उपस्थित लोगों के लिए एक उपयोगी संदर्भ मार्गदर्शिका थीं।

इसके अलावा, यद्यपि सत्र मुख्य रूप से हिंदी में आयोजित किया गया था, वक्ताओं ने आवश्यकता पड़ने पर मराठी में महत्वपूर्ण अवधारणाओं को विचारपूर्वक समझाया, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक प्रतिभागी शामिल महसूस करे और अधिनियम की बारीकियों को पूरी तरह से समझ सके।

यह कार्यक्रम निगम की समावेशी कार्य संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण था। सत्र में कई वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और जागरूक नागरिक होने के महत्व पर बल दिया:

- सुश्री मनाली पतके (एफएए और महाप्रबंधक)
- सुश्री मेधा सावंत (उप महाप्रबंधक)
- श्री मनोज कावरे (सीपीआईओ और सहायक महाप्रबंधक)
- सुश्री स्वाति सिंह (मुख्य प्रबंधक)
- सुश्री प्रतिभा जन्नू (वरिष्ठ प्रबंधक)

अपने संबोधनों में, वरिष्ठ प्रबंधन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सूचना का अधिकार केवल एक कानूनी उपकरण नहीं है, बल्कि लोकतंत्र का एक आधारशिला है जो हर स्तर पर जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

मुख्य प्रशिक्षण सत्र सहायक प्रबंधक शिखा भारद्वाज द्वारा संचालित किया गया, जिन्होंने जटिल कानूनी शब्दावली को सरल और रोजमर्रा के उदाहरणों में समझाया। इस अभियान को सहायक प्रबंधकों की एक समर्पित टीम के सामूहिक प्रयासों से कुशलतापूर्वक क्रियान्वित किया गया:

- श्री ज्ञानेंद्र बेहरा
- सुश्री अलीशा सरानिया
- श्री विशाल अग्रवाल

टीम ने आवेदन दाखिल करने की प्रक्रिया, समयसीमा और अधिनियम के तहत किस प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जैसे व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे सहायक कर्मचारियों को प्रक्रिया को समझने में आत्मविश्वास प्राप्त हुआ।

सत्र के समापन के करीब आते ही माहौल जानकारीपूर्ण से ऊर्जामय हो गया। श्री ज्ञानेंद्र बेहरा ने एक मनोरंजक प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन किया, जिसमें कर्मचारियों ने अपने नए ज्ञान को परखने के लिए उत्साहपूर्वक भाग लिया। सही उत्तरों पर तालियाँ बजीं, जिससे एक जीवंत और आकर्षक शिक्षण वातावरण का निर्माण हुआ।

इस अभियान का समापन सौहार्दपूर्ण ढंग से हुआ, जिसमें सभी उपस्थित लोगों को चाय और नाश्ता परोसा गया, जिससे प्रबंधन और सहायक कर्मचारियों के बीच अनौपचारिक बातचीत का मंच मिला। जीआईसी री की यह पहल कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी और आंतरिक कर्मचारी सशक्तिकरण का एक सफल उदाहरण है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2025

हीना देवरे
(उप प्रबंधक)

सतर्कता जागरूकता ग्राम सभा आउटरीच कार्यक्रम :

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत, केन्द्रीय सतर्कता आयोग के मार्गदर्शन में ग्रामीण एवं शैक्षणिक स्तर पर जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम में भारतीय साधारण बीमा निगम के सतर्कता विभाग द्वारा गैर-सरकारी संगठन, वीरांगना महिला

मंडल (वीएमएम) के सहयोग से शाहापुर तालुका के पंढरीचा पाडा गांव में "सतर्कता जागरूकता ग्राम सभा" का आयोजन दिनांक 17.10.2025 को किया गया। इस ग्राम सभा में लगभग 50 ग्रामीणों ने भाग लेकर सक्रिय सहभागिता की।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को भ्रष्टाचार के प्रति सतर्क करना, पारदर्शिता एवं ईमानदारी के महत्व को समझाना तथा विभिन्न सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के सही उपयोग के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम के दौरान यह संदेश दिया गया कि सतर्कता केवल किसी एक संस्था की नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

इस अवसर पर महाराष्ट्र शासन के पंचायती राज विभाग के उप निदेशक, एनजीओ के सदस्य, ग्राम पंचायत प्रतिनिधि, पुलिस पाटिल, सरपंच तथा बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीण उपस्थित रहे। जीआईसी री की ओर से श्री एस. अलागरसामी, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्रीमती माधुरी नायडू, मुख्य प्रबंधक, श्रीमती हीना देवरे, उप प्रबंधक ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआईसी री) की सतर्कता टीम ने इस वर्ष की थीम "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी" पर प्रकाश डालते हुए पारदर्शिता, ईमानदारी, सतर्कता तथा भ्रष्टाचार की रोकथाम में जनभागीदारी की भूमिका को रेखांकित किया। साथ ही, आम नागरिकों के दैनिक जीवन में उपयोगी विभिन्न सरकारी कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी दी गई, जिससे ग्रामीण जनता इन योजनाओं का लाभ सही तरीके से उठा सकें।

विद्यालय स्तरीय सतर्कता जागरूकता आउटरीच कार्यक्रम

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार, भविष्य के जिम्मेदार नागरिक तैयार करने हेतु विद्यालयी छात्रों में भी सतर्कता एवं भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से दिनांक 17.10.2025 को ही जिला परिषद विद्यालय, पंढरीचा पाडा शाहापुर में सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य सहित कुल 42 विद्यालयी विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों में ईमानदारी एवं नैतिक आचरण के महत्व को समझाने हेतु एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। छात्रों ने अत्यंत उत्साह के साथ अपने ज्ञान का प्रदर्शन किया तथा विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इससे विद्यार्थियों में सतर्कता, नैतिक मूल्यों एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता के प्रति रुचि और सहभागिता को प्रोत्साहन मिला।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत आयोजित सतर्कता जागरूकता ग्राम सभा आउटरीच कार्यक्रम एवं विद्यालय स्तरीय सतर्कता जागरूकता आउटरीच कार्यक्रम को समाचार माध्यमों में व्यापक एवं उल्लेखनीय प्रचार-प्रसार प्राप्त हुआ। इन कार्यक्रमों से संबंधित समाचार विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए।

1. पुण्यनगरी (मराठी समाचार पत्र)

2. वृत्तमानस मराठी दैनिक
3. हिंदुस्तान टाइम्स (अंग्रेज़ी समाचार पत्र)

ग्राम सभा एवं विद्यालय स्तर पर आयोजित इन आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि सतर्कता समाज के प्रत्येक वर्ग की जिम्मेदारी है। ग्रामीणों एवं छात्रों में पारदर्शिता, ईमानदारी और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाकर ही एक स्वच्छ, जवाबदेह और भ्रष्टाचार-मुक्त समाज का निर्माण संभव है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत आयोजित ये कार्यक्रम इस दिशा में एक सार्थक एवं प्रभावी पहल सिद्ध हुए।

GIC Re तर्फे शहापूरात भ्रष्टाचार विरोधी जनजागृती मोहीमेचे आयोजन

प्रतिनिधी
शहापूर

GIC Re ने पांडरिचा पाडा गाव, शाहापूर तालुका, ठाणे जिल्ह्यात भ्रष्टाचार विरोधी जनजागृती मोहीम आयोजित केली. ही मोहीम एस. अलागरसायम, मुख्य चौकशी अधिकारी, आणि श्रीमती माधुरी नायडू, मुख्य व्यवस्थापक यांच्या नेतृत्वाखाली पार पडली, तसेच विरंगना महिला मंडळ यांनी सक्रिय सहभाग घेतला.

विद्यार्थी, पालक, गावचे सरपंच आणि पोलीस पाटील भरत चौधरी यांचे उपस्थितीत कार्यक्रम पार पडला. गावकऱ्यांनी GIC Re आणि विरंगना महिला मंडळाच्या या जनजागृती उपक्रमाचे कौतुक केले. कार्यक्रमानंतर, कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) अंतर्गत विरंगना महिला मंडळाने पाच शौचालय युनिट्स झिल्हा परिषद शाळांना हस्तांतरित केल्या. या युनिट्स विशेषत: विकलांग विद्यार्थ्यांसाठी, मुली आणि मुलांसाठी डिझाइन केल्या आहेत. वेलोली, किन्हवली, मुगांव, उंबराई, नारायणगाव यां गावात शौचालय युनिट्स वितरित करण्यात आले या CSR उपक्रमामुळे गावकऱ्यांमध्ये मोठ्या प्रमाणावर समाधान आणि कौतुक व्यक्त झाले, ज्यातून GIC Re च्या सामाजिक कल्याण आणि समावेशात्मक विकासासाठीच्या वचनबद्धतेचे प्रतिबिंब दिसून आले.

कार्मिक समाचार

आगमन :

श्री उदय लक्ष्मणदास देवी का निगम के मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में आगमन हुआ है।

स्थानांतरण :

उप प्रबंधक श्री भूपेन्द्र मीणा, उप प्रबंधक श्री अर्पित सिंह सिसोदिया और सहायक प्रबंधक श्री मनीष कुमार वरखेड़े का जीआईसी री के मुख्यालय से गिफ्ट सिटी अहमदाबाद में स्थानांतरण हुआ।

सेवानिवृत्ति:

श्री मेल्विन कोलासे, सहायक महाप्रबंधक; श्री सुरेश सालियान, मुख्य प्रबंधक और सुश्री नीलम शानभाग, वरिष्ठ प्रबंधक के पद से अपनी पूर्ण कालिक सेवा देने के पश्चात् सेवानिवृत्त हुए। सुश्री छाया भेरे, मुख्य प्रबंधक के पद से ऐच्छिक सेवानिवृत्त हुई। श्री एस. अल्गारस्वामी का मुख्य सतर्कता अधिकारी पद का अनुबंध पूर्ण हुआ।

मानव संसाधन विभाग

निधन :

सहायक प्रबंधक, सुश्री दीक्षा डेका का आकस्मिक तथा असामयिक निधन हुआ। यह नुकसान अपूरणीय है और उनकी यादें हमेशा हमारे साथ रहेंगी। इस दुखद अवसर पर 'क्षितिज' उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

गर्मियों में सेहत और तंदुरुस्ती के उपाय

डॉ. अनुराग पी. राऊळ
(उप प्रबंधक, चिकित्सा विशेषज्ञ)

गर्मियों में स्वस्थ रहने के लिए हाइड्रेशन (शरीर में पानी की मात्रा), धूप से सुरक्षा और खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यहाँ आपके लिए मुख्य सुझाव दिए गए हैं:

1. हाइड्रेशन को प्राथमिकता दें

गर्मियों में पसीने के माध्यम से शरीर से पानी तेजी से निकलता है, इसलिए तरल पदार्थों का सेवन सबसे महत्वपूर्ण है।

- नियमित पानी पिएं: दिन भर में कम से कम 8-10 गिलास (2.5-3 लीटर) पानी पिएं, भले ही आपको प्यास न लगे।
- प्राकृतिक पेय: इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी पूरी करने के लिए नारियल पानी, छाछ, और नींबू पानी का सेवन करें।
- इनसे बचें: शराब, कॉफी और मीठे सोडा का सेवन कम करें, क्योंकि ये शरीर को और अधिक डिहाइड्रेट (पानी की कमी) कर सकते हैं।
- पानी से भरपूर फल: तरबूज (92% पानी), खीरा और स्ट्रॉबेरी जैसे फल खाएं।

2. धूप से सुरक्षा और त्वचा की देखभाल

- सनस्क्रीन लगाएं: कम से कम SPF 30 वाला ब्रॉड-स्पेक्ट्रम सनस्क्रीन लगाएं और हर 2 घंटे में इसे दोबारा लगाएं।
- सही समय चुनें: दोपहर 12 बजे से 4 बजे के बीच बाहर निकलने से बचें, क्योंकि इस समय गर्मी सबसे अधिक होती है।
- सही कपड़े पहनें: हल्के रंग के, ढीले-ढाले सूती या लिनन के कपड़े पहनें।
- चश्मा और टोपी: अपनी आँखों और चेहरे को बचाने के लिए यूवी-प्रोटेक्टिव धूप का चश्मा और चौड़ी टोपी पहनें।

3. खान-पान पर ध्यान दें

- हल्का भोजन: एक बार में भारी भोजन करने के बजाय, दिन भर में थोड़ा-थोड़ा और हल्का खाना खाएं।
- तले-भुने खाने से बचें: मसालेदार और तैलीय भोजन शरीर की गर्मी और एसिडिटी को बढ़ा सकता है।
- मौसमी फल: अपनी डाइट में हरी पत्तेदार सब्जियां, जामुन,

आम और खट्टे फल शामिल करें।

4. व्यायाम और आराम

- समय बदलें: व्यायाम के लिए सुबह जल्दी या देर शाम का समय चुनें जब तापमान कम हो।
- घर के अंदर व्यायाम: बहुत अधिक गर्मी होने पर घर के अंदर योग या जिम करें।
- नींद: शरीर को रिकवर करने के लिए 7-9 घंटे की नींद लें और ठंडे बिस्तर का उपयोग करें।

5. स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा

- व्यक्तिगत स्वच्छता: पसीने से होने वाले इन्फेक्शन और घमौरियों से बचने के लिए दिन में दो बार नहाएं।
- ताजा खाना: सड़क किनारे कटे हुए फल या खुला खाना न खाएं और बचे हुए खाने को तुरंत फ्रिज में रखें।

6. गर्म रातों के लिए टिप्स

- सोने से पहले गुनगुने या ठंडे पानी से नहाएं।
- बिस्तर की चादर या तकिये के कवर को सोने से 15 मिनट

पहले फ्रीजर में रखें (पॉलीथीन में लपेटकर) ताकि तुरंत ठंडक मिले।

7. गर्मियों में त्वचा की देखभाल और सुरक्षा

गर्मी और उमस की वजह से अक्सर त्वचा "बंद" हो जाती है और मुहासे ज़्यादा निकलने लगते हैं।

- जेल फ़ॉर्मूले अपनाएँ: भारी क्रीम की जगह हल्के, पानी-आधारित या नॉन-कॉमेडोजेनिक मॉइस्चराइज़र (हाइलूरोनिक एसिड या एलोवेरा वाले) इस्तेमाल करें, ताकि त्वचा के रोमछिद्र बंद न हों।

- एंटीऑक्सीडेंट का सहारा लें: सुबह सनस्क्रीन लगाने से पहले विटामिन सी सीरम लगाएँ; यह यूवी किरणों से होने वाले नुकसान को बेअसर करने और काले धब्बे पड़ने से रोकने में मदद करता है।
- सही तरीके से सफ़ाई करें: त्वचा की सुरक्षा परत को नुकसान पहुँचाए बिना, त्वचा में मौजूद अतिरिक्त तेल (सीबम) को नियंत्रित करने के लिए सैलिसिलिक एसिड या जिंक-आधारित सौम्य क्लींज़र का इस्तेमाल करें।
- एसपीएफ ज़रूर लगाएँ: कम से कम एसपीएफ 30 वाला ब्रॉड-स्पेक्ट्रम सनस्क्रीन इस्तेमाल करें और हर 2 घंटे में इसे दोबारा लगाएँ—धूप से झुलसने पर त्वचा की गर्मी बाहर निकालने की क्षमता कम हो जाती है।

याद रखें, गर्मी में आपके शरीर को ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है—इसलिए उसके संकेतों पर ध्यान दें। पहले से की गई देखभाल ही एक सुरक्षित, जोशीले और सेहतमंद गर्मी के मौसम की कुंजी है।

सपनों की सड़क पर: मुंबई से राजस्थान तक एक यादगार पारिवारिक कार यात्रा

अजीत बारला
(वरिष्ठ प्रबंधक)

परिवार के साथ लंबी यात्रा केवल स्थानों की दूरी तय करना नहीं होती, बल्कि रिश्तों को समय देना, स्मृतियाँ रचना और जीवन की गति को कुछ देर के लिए धीमा कर देना भी होती है। महानगर मुंबई की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में अक्सर ऐसा अवसर नहीं मिलता कि हम सब साथ बैठें, बिना घड़ी देखे बातें करें और रास्तों को महसूस करें। इसी भावना के साथ हमने—मैं, मेरी पत्नी और बच्चे कार द्वारा मुंबई से गुजरात और राजस्थान की ओर एक लंबी यात्रा का निश्चय किया।

यात्रा का मार्ग इस प्रकार तय किया गया:

मुंबई > वडोदरा > उदयपुर > जोधपुर > जयपुर > वापसी मुंबई।

लगभग 2500 किलोमीटर से अधिक की यह यात्रा केवल भौगोलिक नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक भी थी।

मुंबई से वडोदरा: यात्रा की पहली सुबह -

सुबह के लगभग पाँच बजे, जब मुंबई अभी नींद में डूबी हुई थी, हमारी कार घर के बाहर खड़ी तैयार थी। बच्चों की उत्सुकता और बड़ों की सावधानी—दोनों मिलकर यात्रा की शुरुआत हो रही थी। अंधेरी की हल्की ठंडी हवा में जब हमने वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे पकड़ा, तब यह एहसास हुआ कि सफर सचमुच शुरू हो चुका है।

मुंबई से निकलते ही ठाणे, वसई और विरार पार करते हुए जैसे जैसे शहर पीछे छूटता गया, मन हल्का होता गया। गुजरात की सीमा में प्रवेश करते ही सड़कें और भी बेहतर होती गईं। रास्ते में छोटे छोटे ढाबों पर रुकना, गरम चाय पीना और बच्चों के लिए नाश्ता लेना—ये सब यात्रा का आनंद बढ़ा रहा था।लगभग आठ घंटे की ड्राइव के बाद हम वडोदरा पहुँचे।

वडोदरा: संस्कृति और सुकून का संगम -

वडोदरा, जिसे पहले बड़ौदा कहा जाता था, गुजरात का एक शांत और सुव्यवस्थित शहर है। यहाँ न शोर है, न जल्दबाज़ी। हमारे होटल में प्रवेश करते ही लगा जैसे घर जैसी सादगी और व्यवस्था यहाँ भी है। सबसे पहले हमने लक्ष्मी विलास पैलेस देखा। विशाल परिसर, यूरोपीय स्थापत्य और राजसी वैभव देखते ही बनता था। बच्चों के लिए यह किसी महल की कहानी से कम नहीं था। इसके बाद स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी की यात्रा हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायक और यादगार रही।सरदार वल्लभभाई पटेल की विशाल प्रतिमा को निकट से देखकर गर्व और सम्मान की भावना जाग उठी। नर्मदा नदी के किनारे स्थित यह स्थल

शांति और भव्यता का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। पूरे परिसर की सुव्यवस्था और जानकारीपूर्ण प्रदर्शनी ने इस अनुभव को और भी खास बना दिया।

शाम को गुजराती थाली—ढोकला, कढ़ी, थेपला, सब्जियाँ और मीठे में श्रीखंड—ने सभी का दिल जीत लिया। एक दिन के ठहराव के बाद अगली सुबह हम राजस्थान की ओर चल पड़े।

वडोदरा से उदयपुर: हरियाली से झीलों तक -

वडोदरा से उदयपुर तक का रास्ता प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। अरावली पर्वतमाला की पहली झलक इसी मार्ग पर मिलती है। सड़क के दोनों ओर दिखाई देती हरियाली, छोटे गाँव और खेत—सब मिलकर एक अलग ही अनुभव देते हैं।

दोपहर होते होते हम उदयपुर पहुँचे—जिसे झीलों का शहर कहा जाता है। होटल की बालकनी से दिखाई देती फतेह सागर झील मानो हमारा स्वागत कर रही थी।

उदयपुर: झीलों, महलों और शांति का शहर -

उदयपुर की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी शांति। यहाँ इतिहास केवल पुस्तकों में नहीं, बल्कि हवाओं में घुला हुआ लगता है। हमने सबसे पहले सिटी पैलेस देखा—राजपूताना शान का

जीवंत उदाहरण। महल की बालकनियों से झीलों का दृश्य अत्यंत मनमोहक था। सिटी पैलेस उदयपुर की यात्रा हमें राजसी वैभव और इतिहास की गहराई का अनुभव कराती है। महल की ऊँचाई से झीलों और शहर का दृश्य अत्यंत मनमोहक लगता है। महाराणा प्रताप की वीरता और स्वाभिमान की कहानियाँ वहाँ पहुँचकर और अधिक जीवंत महसूस हुईं। उनसे जुड़ी स्मृतियाँ मन में साहस, बलिदान और राष्ट्रप्रेम की भावना भर देती हैं।

पिछोला झील में नाव की सवारी हमारे बच्चों के लिए सबसे खास अनुभव रही। झील के बीच स्थित जग मंदिर और दूर दिखता लेक पैलेस—यह दृश्य जीवन भर स्मृति में बस गया।शाम को हम लोक कला बाज़ार में घूमे—राजस्थानी रंगीन कपड़े, हाथ से बने आभूषण और कठपुतलियाँ देखकर बच्चे बहुत उत्साहित थे। रात का भोजन पारंपरिक दाल बाटी चूरमा के साथ हुआ।

उदयपुर से जोधपुर: रेगिस्तान की ओर -

अगली सुबह हमने जोधपुर के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में हरियाली धीरे धीरे कम होती गई और रेतीला परिदृश्य उभरने लगा। राजस्थान का यह बदलाव देखने लायक था। लगभग छह घंटे की यात्रा के बाद नीले शहर—जोधपुर—का प्रथम दृश्य दिखाई दिया।

जोधपुर: नीले रंगों और वीरता की भूमि -

जोधपुर का नाम लेते ही मेहरानगढ़ किला आँखों के सामने आ

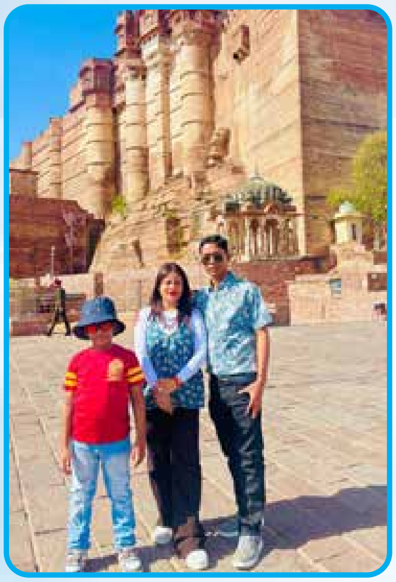

जाता है। ऊँची पहाड़ी पर स्थित यह किला शहर पर राज करता हुआ प्रतीत होता है। जैसे ही हम किले के भीतर पहुँचे, इतिहास की गूँज कानों में सुनाई देने लगी। किले के भीतर संग्रहालय, हथियार, पालकियाँ और राजसी कक्ष देखकर सभी मंत्रमुग्ध थे। ऊपर से शहर का दृश्य अद्भुत था—नीले घरों की कतारें, मानो आकाश धरती पर उतर आया हो।

इसके बाद हमने जसवंत थड़ा देखा—सफेद संगमरमर से बना यह स्मारक शांति का प्रतीक है। शाम को घंटाघर बाज़ार में घूमना, मिर्ची बड़ा और मावा कचौड़ी खाना, जोधपुर यात्रा को पूर्ण बनाता है।

जोधपुर से जयपुर का रास्ता अपेक्षाकृत लंबा है, परंतु सड़क अच्छी होने के कारण यात्रा सहज रही। रास्ते में छोटे कस्बे, ऊँट, और धोती कुर्ता पहने लोग राजस्थान की आत्मा से परिचित कराते रहे। जयपुर पहुँचते पहुंचते शाम हो चुकी थी।

जयपुर: गुलाबी शहर का वैभव -

जयपुर भारत के सबसे लोकप्रिय पर्यटन नगरों में से एक है। यहाँ इतिहास और आधुनिकता का सुंदर संगम दिखाई देता है। पत्रिका गेट, जयपुर की स्थापत्य कला का अनुभव हमारे लिए अत्यंत अद्भुत रहा। रंग बिरंगे स्तंभों और बारीक नक्काशी में राजस्थान की समृद्ध संस्कृति झलकती है। हर मेहराब और चित्र इतिहास की एक कहानी कहता हुआ प्रतीत होता है। यह स्थान कला, परंपरा और आधुनिक सौंदर्य का सुंदर संगम है।

अगले दिन हमने आमेर किला देखा। आमेर किला, जयपुर की यात्रा हमारे लिए बहुत ही रोमांचक और यादगार रही। ऊँची पहाड़ी पर स्थित यह किला अपनी भव्य वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व से मन को मंत्रमुग्ध कर देता है। शीश महल और किले से दिखता आसपास का दृश्य अत्यंत सुंदर और आकर्षक था। कुल मिलाकर, आमेर किला राजस्थान की शान और गौरव का जीवंत प्रतीक लगा। हाथी की सवारी न सही, पर किले तक

चढ़ना स्वयं में एक अनुभव था। किले की दीवारें, दीवान ए आम, शीश महल—सब कुछ शाही था। इसके बाद हवा महल, जंतर मंतर और सिटी पैलेस ने जयपुर की भव्यता को और गहराई दी। खरीदारी के लिए बापू बाज़ार और जोहरी बाज़ार स्वर्ग समान लगे—लाख की चूड़ियाँ, बंदेजनी साड़ियाँ, राजस्थानी जूते। बच्चों ने रंगीन पतंगें खरीदीं। भोजन में राजस्थानी थाली—केर सांगरी, गट्टे की सब्ज़ी और घेवर—ने सभी यात्राओं का स्वाद जैसे एक साथ परोस दिया।

वापसी की यात्रा: स्मृतियों का साथ -

जयपुर से सीधे मुंबई वापसी का निर्णय लिया गया, बीच में रात्रि विश्राम के साथ। रास्ता लंबा था, पर अनुभवों से भरा हुआ। कार के भीतर अब बातें थीं—“याद है उदयपुर की नाव?”, “मेहरानगढ़ कितना ऊँचा था!”, “जयपुर में कितनी भीड़ थी!”—यात्रा अब किस्सों में बदल चुकी थी।

यात्रा से मिले अनुभव -

इस यात्रा ने हमें सिखाया कि—

- भारत की विविधता सड़क मार्ग से अधिक गहराई से महसूस होती है
- परिवार के साथ बिताया समय सबसे मूल्यवान होता है
- धीमी यात्रा, तेज़ जीवन का सबसे अच्छा उपचार है

कार यात्रा का सबसे बड़ा लाभ यह था कि हम अपनी गति से चले, जहाँ मन किया रुके, और हर पल को जीया। मुंबई से राजस्थान तक की यह पारिवारिक कार यात्रा केवल दर्शनीय स्थलों का भ्रमण नहीं थी, बल्कि आत्मिक जुड़ाव, पीढ़ियों के संवाद और साझा यादों की रचना थी। जब हम वापस मुंबई लौटे, तब थकान नहीं थी—केवल एक संतोष था, कि हमने समय को सही जगह लगाया। आज भी जब परिवार एक साथ बैठता है, तो इस यात्रा की बातें स्वतः शुरू हो जाती हैं। शायद यही किसी भी यात्रा की सबसे बड़ी सफलता होती है।

दरारों पर टेप

अर्पित सिंह सिसोदिया
(उप प्रबंधक)

समय के साथ कुछ आदतें हमारे साथ इतनी गहराई से जुड़ जाती हैं कि वे हमारी पहचान का हिस्सा लगने लगती हैं।

आज तक जिन भूमिकाओं में मैंने कार्य किया, वहाँ मेरी बारीकी पर ध्यान देने की आदत ने मुझे एक विश्वसनीय पेशेवर के रूप में स्थापित किया। जिन प्रणालियों की ज़िम्मेदारी मैंने संभाली, उनमें विफलता की संभावना न्यूनतम रही। समयसीमाएँ लगातार पूरी हुईं, संभावित जोखिमों की पहले ही पहचान कर ली गई, और किसी भी अधूरे पहलू को समय रहते सुलझा लिया गया। समय के साथ एक ऐसा भरोसा निर्मित हुआ —जो शब्दों से नहीं, बल्कि सौंपे गए दायित्वों और बढ़ते उत्तरदायित्व में झलकता है।

फिर भी, इस अनुशासन के नीचे कहीं एक सवाल लगातार उपस्थित रहा: इतना नियंत्रण क्यों ज़रूरी लगता है? एक छोटी सी चूक भी इतनी भारी क्यों महसूस होती है? और अनिश्चितता मुझे जिज्ञासा के बजाय बेचैनी क्यों दे देती है?

इन सवालों का उत्तर किसी बड़े क्षण में नहीं आया। वह चुपचाप उभरा — मेरी पत्नी के साथ एक सामान्य सी बातचीत में। संयोग से (या शायद सौभाग्य से), वह स्वयं एक मनोचिकित्सक हैं। सबसे पहले उन्हीं ने इस पैटर्न को स्पष्ट रूप से देखा—कि मैं अपने हर छोटे से छोटे काम में भी जरूरत से ज्यादा सजग रहता हूँ।

जो एक साधारण बातचीत के रूप में शुरू हुआ था, वह धीरे धीरे एक सत्र में परिवर्तित हो गया — संयमित, धैर्यपूर्ण और पूर्ण ईमानदारी से भरा हुआ। जब उन्होंने मेरे व्यवहार को केवल संभालने के बजाय उसके मूल कारण को समझने का प्रयास किया, तो एक स्मृति अप्रत्याशित स्पष्टता के साथ सामने आ गई — एक ऐसा दिन, जिसे मैंने वर्षों से सचेत रूप से याद ही नहीं किया था — वह दरअसल मेरे स्कूल की एक साधारण-सी सुबह थी।

उस समय मैं तेरह वर्ष का था और आठवीं कक्षा में पढ़ रहा था —महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास के बीच संतुलन साधता हुआ। उससे पिछले वर्ष, पहली बार मैं अपनी वार्षिक परीक्षा में तीसरे स्थान पर आया था। काग़ज़ों पर यह एक साधारण सी उपलब्धि थी, लेकिन मेरे लिए यह सिर्फ़ गर्व का क्षण नहीं था — इसके साथ एक शांत, भीतर ही भीतर पनपता हुआ संकल्प भी जन्म ले चुका था।

मेरा स्कूल एक पुराना, केवल लड़कों का कॉन्वेंट संस्थान था—व्यवस्थित, कठोर और अपने नियमों में समझौता न करने वाला। अनुशासन पर विशेष सतर्कता रखी जाती थी; शायद इसलिए कि किशोर ऊर्जा से भरे वातावरण में व्यवस्था बनाए रखना उनकी प्राथमिकता थी। स्कूल का नेतृत्व प्रिंसिपल करते थे, जो कि स्कूल के चर्च के "फादर" भी थे, और अपनी सख़्ती के लिए प्रसिद्ध थे।

उस साल की शुरुआत अच्छी रही। मेरा चयन अंडर 14 स्कूल क्रिकेट टीम में ओपनिंग ऑल राउंडर के रूप में हुआ। शिक्षक कक्षा में मुझे पहले से अधिक पूछने लगे। सहपाठी, जो पहले मेरी गंभीरता को नज़रअंदाज़ करते थे, अब हल्के से सिर हिलाकर स्वीकार करने लगे। मुझे एहसास भी नहीं हुआ, और मैं स्कूल की अनकही श्रेणी में ऊपर चढ़ने लगा।

मेरा छोटा भाई भी उसी स्कूल में पढ़ता था—मुझसे चार कक्षाएँ नीचे। हर सुबह हम एक साथ स्कूल आते, एक सी यूनिफ़ॉर्म में। वह सिर्फ़ मेरे पीछे नहीं चलता था, बल्कि मुझे देख देखकर आदतें अपनाता था—बैग उठाने का ढंग, चलने की चाल, यहाँ तक कि सुनते समय सिर का हल्का सा झुकाव। पहले पहल यह अच्छा लगता था। समय के साथ यह ज़िम्मेदारी में बदल गया।

कुछ समय तक ज़िंदगी सहज चलती रही—और शायद इसी सहजता ने मुझे असावधान बना दिया। फिर एक ऐसी सुबह आई — जिसने चुपचाप मेरी सोच और प्रतिक्रिया को हमेशा के लिए बदल दिया।

हमारे स्कूल में सुबह की प्रार्थना सभाएँ सटीक अनुशासन में होती थीं। छात्र कद के अनुसार कतारों में खड़े होते—सबसे छोटे आगे, सबसे लंबे पीछे। मैं बीच में कहीं खड़ा था। उस सुबह मंच की सामान्य एकरसता टूट गई। तीन छात्रों ने समाचार केवल पढ़े नहीं, बल्कि प्रदर्शन की तरह प्रस्तुत किए—एक एंकर की तरह नाटकीय, दूसरा हिंदी अंग्रेज़ी के बीच तीखे बदलाव के साथ, और तीसरा किसी राजनीतिक टिप्पणीकार की अतिशयोक्ति करता हुआ।

यह अप्रत्याशित था। और सच कहूँ तो—मज़ेदार भी। उसी सुबह मेरे पीछे अमित खड़ा था—एक शरारती लड़का, जिसे नकल करने की विलक्षण कला थी, लेकिन टाइमिंग अक्सर उसका साथ नहीं देता था।

वह झुककर बोला - “सन्नाटे को चीरती हुई सनसनी... सुन कर देती है... ”

मेरी हँसी निकल गई—छोटी सी, क्षणिक, लगभग एक साँस भर। लेकिन उस सन्नाटे में वह आवाज़ चीख जैसी बन गई।

मंच से प्रिंसिपल (जिन्हें सब “फ़ादर” कहकर बुलाते थे) ने हाथ उठाया। माइक्रोफोन बीच वाक्य में बंद हो गए। उनकी निगाहें धीरे धीरे पंक्तियों पर घूमीं—सचेत, सटीक। पहले मुझ पर रुकीं।

फिर अमित पर।

“तुम दोनों। स्टेज पर। अभी।”

आँगन में हर नज़र हमारी ओर उठ गई। पैर अपने आप चल रहे थे, जैसे ज़मीन नीचे से हट रही हो। पास पहुँचने पर मंच अस्वाभाविक रूप से ऊँचा लगा, धूप पहले से ज़्यादा तेज़। माफ़ी, स्पष्टीकरण, इरादे—शब्द बनकर गले में ही सूख गए, बाहर आने से पहले। फ़ादर की परछाईं मुझ पर पड़ी। एक क्षण के लिए पूरी जगह स्थिर हो गई—जैसे आँगन ने भी साँस रोक ली हो। फिर पहला थप्पड़ पड़ा।

सिर्फ़ चोट की तरह नहीं, बल्कि एक घोषणा की तरह—हवा चीरती हुई तेज़ आवाज़। सिर एक ओर झटका खा गया, आँखों के सामने उजाला सा चमका, और गाल में जलन फैल गई। इससे पहले कि मैं सँभल पाता, दूसरा थप्पड़ पड़ गया। फिर तीसरा।

और चौथा।

दर्द तीखा था, लेकिन जो साथ रह गया, वह आवाज़ थी— स्कूल की दीवारों से टकराकर लौटती हुई, गलियारों में गूँजती हुई, कहीं भीतर तक उतरती हुई। भीड़ यूनिफ़ॉर्म का धुँधला सा समूह बन गई।

सिवाय एक चेहरे के। मेरे भाई के।

वह न रो रहा था, न चौंका हुआ दिख रहा था—बस स्थिर, बिना पलक झपकाए, जैसे किसी ने उसे वहीं जमा दिया हो।

दूर कहीं राष्ट्रगान शुरू हुआ। शिक्षक अपनी जगह लौट गए।

छात्र व्यवस्थाबद्ध पंक्तियों में कक्षाओं की ओर बढ़ गए। सब कुछ आगे बढ़ गया। सिवाय इसके कि मेरे भीतर कुछ स्थायी रूप से बंद हो गया—एक ऐसा दरवाज़ा, जिसके होने का मुझे पहले पता ही नहीं था। उन दिनों शारीरिक दंड असामान्य नहीं थे; समाज और अभिभावकों द्वारा उन्हें अनुशासन के स्वीकार्य साधन के रूप में देखा जाता था।

उस सुबह के बाद बहुत दिनों तक मेरा आत्मविश्वास साथ नहीं था। लेकिन एक विचार ने अपनी पकड़ को ढीला नहीं पड़ने दिया — कि यह सब मेरे छोटे भाई के सामने हुआ था। और वही कारण बना कि मैंने स्वयं को झुके नहीं रहने दिया। अपने भाई के लिए मुझे यह साबित करना था कि वह व्यक्ति, जिसे वह कभी आदर्श मानता था, आज भी उसके विश्वास के योग्य है। मैंने और मेहनत की। ज़्यादा अभ्यास किया। सोच समझकर, स्वयं को फिर से खड़ा किया।

उसी शैक्षणिक वर्ष के अंत में मैं अपनी कक्षा में प्रथम आया। उसी फ़ादर ने, जिन्होंने कुछ महीने पहले मुझे दंड दिया था, मंच से मेरा नाम पुकारा, रिपोर्ट कार्ड थमाया और माइक्रोफोन पर कहा कि उन्हें मुझ पर गर्व है।

साल के अंत तक ज़िंदगी सतह पर सामान्य लगने लगी, लेकिन उस सुबह का प्रभाव कभी पूरी तरह गया नहीं। वह अंदर ही अंदर बस गया था — एक छोटी सी चूक भी कितनी भारी पड़ सकती है— इसकी याद दिलाता हुआ।

समय के साथ मुझे समझ आया कि मेरी अत्यधिक सतर्कता केवल अनुशासन नहीं थी—वह सुरक्षा का एक तरीका थी, जिससे मैं हर संभावित चूक से पहले ही स्वयं को तैयार रखना चाहता था। यही आदत धीरे धीरे मेरी पेशेवर पहचान बनने लगी और मेरी उपलब्धियों की आधारशिला बनी। लेकिन इसी प्रक्रिया में, परिणामों पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं कई बार सामने बैठे व्यक्ति के भावनात्मक संदर्भ को नज़रअंदाज़ कर देता था। सूक्ष्मता धीरे धीरे कठोरता में बदल जाती थी , और संवेदनशीलता चुपचाप पीछे हट जाती थी।

इस सच को पहचानना—और उसे ईमानदारी से स्वीकार करना—मेरी पत्नी के बिना संभव नहीं था। उन्होंने न केवल मुझे असंतुलन दिखाया, बल्कि उसे ठीक करने में भी साथ दिया। उन्होंने याद दिलाया कि संवेदनशीलता ताक़त को कम नहीं करती—वह उसे गहराई देती है।

मैं आज भी दरारों पर टेप लगाता हूँ।

लेकिन अब रुककर सोचता हूँ—क्या वाकई मरम्मत ज़रूरी है, या केवल समझ?

क्या यह वास्तविक जोखिम है, या सिर्फ़ मानवीय अपूर्णता?

जो कभी एक टूटन थी, वही आज एक ढाँचा बन गई है। उस क्षण से उपजा अनुशासन अब भी मेरी कार्यशैली को दिशा देता है, और फिर से पाई गई संवेदनशीलता यह सुनिश्चित करती है कि उत्कृष्टता की खोज में मानवता पीछे न छूटे। इसी संतुलन के साथ मैं आज भी काम करता हूँ — सोच समझकर, ज़िम्मेदारी के साथ, और स्पष्ट उद्देश्य के साथ।

नशा : एक व्यक्तिगत आदत नहीं — एक गहरी सामाजिक समस्या

आस्था उपाध्याय
(सहायक प्रबंधक)

"रात की खामोशी अभी टूटी भी नहीं थी कि सुबह एक दर्दनाक खबर सामने आई कि मुंबई के एक संगीत समारोह में ड्रग ओवरडोज से दो युवाओं की मौत हो गई।"

ऐसी खबरें अब चौंकाती कम, और परेशान अधिक करती हैं, क्योंकि यह किसी एक घटना की कहानी नहीं, बल्कि एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति का संकेत है। हम अक्सर नशे को एक सीमित, निजी समस्या मान बैठते हैं, मानो यह किसी और के घर की बात हो। लेकिन सच इससे कहीं अधिक असहज है। नशा आज हमारे समाज के हर स्तर में मौजूद है, कहीं खुले रूप में, कहीं दरवाज़ों के पीछे। यह केवल ड्रग्स तक सीमित नहीं है , बल्कि शराब, विशेषकर देशी और अवैध शराब, भी उतनी ही मारक समस्या है। यह लत बिना किसी शोर के पनपती है, और जब तक इसका असली रूप समझ में आता है, तब तक यह व्यक्ति के साथ, साथ उसके पूरे परिवेश को अपनी गिरफ़्त में ले चुकी होती है। इसलिए अब यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि नशा केवल एक व्यक्तिगत आदत नहीं , बल्कि एक गहरी, जड़ जमा चुकी सामाजिक व्याधि है।

बदलता स्वरूप और सामान्यीकरण की खतरनाक प्रवृत्ति

जहाँ पहले शराब और तंबाकू मुख्य रूप से प्रचलित थे, वहीं आज सिंथेटिक ड्रग्स, रासायनिक पदार्थ और चिकित्सकीय पर्चे से मिलने वाली दवाओं का दुरुपयोग तेज़ी से बढ़ा है, किंतु सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि शराब, जिसे समाज 'सामान्य' मान चुका है, वास्तव में सबसे व्यापक और खतरनाक नशा है। महानगरों में 'पार्टी संस्कृति' के नाम पर इसका महिमामंडन होता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में जहरीली शराब हर साल निर्दोष जानें लेती है। यही विरोधाभास, एक ओर सामाजिक स्वीकृति, दूसरी ओर मूक तबाही, इस समस्या को और जटिल बनाता है।

फ़िल्म 'उड़ता पंजाब' ने जब नशे की समस्या को असहज यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया था, तब इसे अतिरंजना माना गया। आज की परिस्थितियाँ उस चित्रण को सच साबित कर रही हैं। सिनेमाघर में 'मादक पदार्थों का सेवन हानिकारक है' की चेतावनी महज औपचारिकता बन चुकी है। व्यवहार में समाज ने नशे के कई रूपों को न केवल स्वीकार कर लिया है, बल्कि उन्हें सामान्य जीवनशैली का हिस्सा भी मान लिया है। फ़िल्मों, वेब सीरीज़ और सोशल मीडिया पर नशे को विद्रोह, स्टेटस, सिंबल या तनाव, मुक्ति के रूप में परोसा जाता है, यह अदृश्य, परंतु प्रभावशाली प्रचार बिना किसी विज्ञापन के युवा मन को आकार देता है।

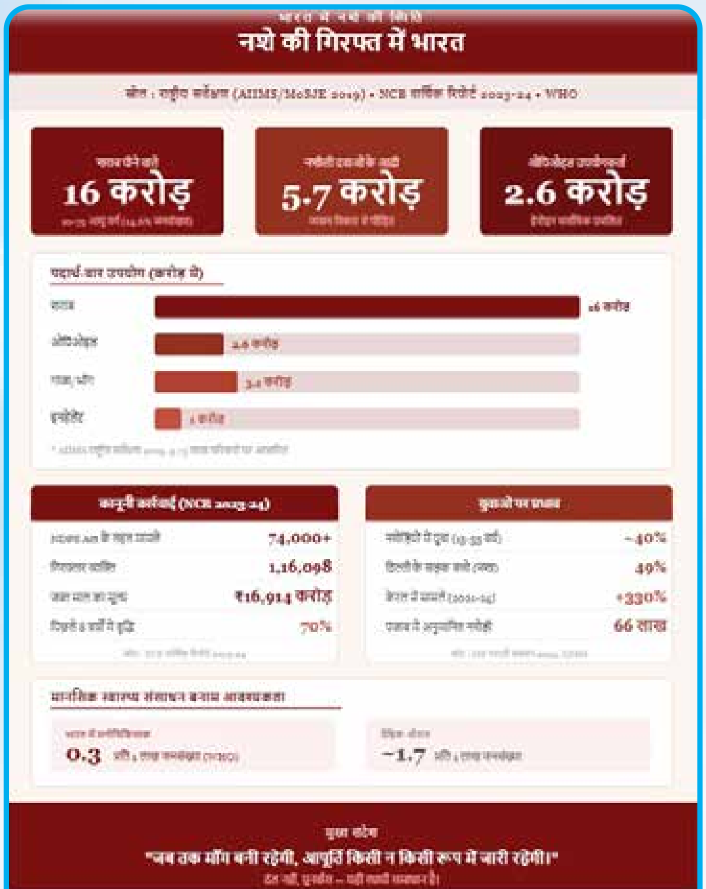

भारत में नशे की स्थिति

जड़ें कहाँ हैं : कारण और मनोविज्ञान

नशा अक्सर केवल एक 'बुरे निर्णय' का नतीजा नहीं होता, यह कई परिस्थितियों और मनोदशाओं के जटिल संगम से उपजता है। आधुनिक जीवन का तनाव, प्रतिस्पर्धा की थकाऊ दौड़ और भविष्य की अनिश्चितता व्यक्ति को भीतर से तोड़ती है। युवाओं में साथियों का दबाव, पहचान की खोज और सामाजिक स्वीकार्यता की चाहत नशे की ओर धकेलती है। परिवारों में संवाद की कमी और भावनात्मक दूरी इसे और गहरा करती है, जब घर में दर्द को शब्द नहीं मिलते, तब बाहर से 'सहारा' नशे की शक्ल में आता है।

एक महत्त्वपूर्ण आयाम जो अक्सर नज़रअंदाज़ होता है — मानसिक स्वास्थ्य और नशे का अटूट रिश्ता। अवसाद, चिंता और पीटीएसडी से पीड़ित व्यक्ति अक्सर 'स्वउपचार' के रूप में नशे का सहारा लेते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में प्रति एक लाख की आबादी पर मात्र 0.3 मनोचिकित्सक उपलब्ध हैं, यह अभाव इस समस्या को और गहरा करता है। इसके साथ ही, आर्थिक असमानता भी एक प्रमुख किंतु कम चर्चित कारण है, जो सबसे कमज़ोर हैं, उन तक सस्ते नशे की पहुँच सबसे आसान है।

युवा पीढ़ी और परिवार: सबसे गहरी मार

राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो के आँकड़े पुष्टि करते हैं कि मादक पदार्थों से जुड़े मामलों में निरंतर वृद्धि हो रही है, यह वृद्धि केवल कानून, व्यवस्था की चुनौती नहीं, समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है। नशे का सबसे दीर्घकालिक प्रभाव युवाओं पर पड़ता है उनकी एकाग्रता घटती है, पढ़ाई प्रभावित होती है, आत्मविश्वास टूटता है और कई मामलों में यह अवसाद, अपराध व आत्मघाती प्रवृत्तियों तक पहुँचता है। वैज्ञानिक दृष्टि से, पूर्वमस्तिष्क प्रांतस्था (प्रीफ्रंटल कोर्टेक्स) जो निर्णय और आत्मनियंत्रण का केंद्र होता है, 25 वर्ष की आयु तक पूरी तरह विकसित नहीं होता; इस दौरान नशे का सेवन मस्तिष्क के विकास को अपूरणीय क्षति पहुँचा सकता है।

नशा केवल व्यक्ति को नहीं तोड़ता, यह परिवार के पूरे ताने-बाने

को छिन्न-भिन्न कर देता है। घरेलू हिंसा, आर्थिक तंगी और रिश्तों में दरारें नशे के वे अनदेखे चेहरे हैं जो चार दीवारी के भीतर रहते हैं। एक ऐसा आयाम जिसे विमर्श में कम जगह मिलती है, नशेड़ी पुरुष के घर की महिला जो घरेलू हिंसा, आर्थिक अभाव और मानसिक आघात एकसाथ झेलती है। समाज के स्तर पर यह संकट अपराध वृद्धि, स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ और अवैध नशे के संगठित व्यापार के रूप में सामने आता है।

सरकारी प्रयास और समाधान का मार्ग

'नशा मुक्त भारत अभियान' (2020) और मादक द्रव्य और मनोदैहिक पदार्थ अधिनियम अंतर्गत कठोर कानूनी प्रावधान, ये प्रयास सराहनीय हैं। 2023 में नारकोटिक्स नियंत्रण ब्यूरो को अतिरिक्त संसाधन और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय, तथा नशा, मुक्ति केंद्रों का विस्तार भी सकारात्मक कदम हैं, किंतु दंडात्मक उपाय अकेले पर्याप्त नहीं हैं। जब तक समाज में माँग बनी रहेगी, आपूर्ति किसी न किसी रूप में जारी रहेगी।

इस समस्या का समाधान बहुआयामी है। परिवार में खुला संवाद और भावनात्मक सुरक्षा नशे के विरुद्ध सबसे मज़बूत कवच है, बच्चों को यह विश्वास दिलाना होगा कि वे बिना डर के घर में बात कर सकते हैं। विद्यालयों में तथ्याधारित शिक्षा और भावनात्मक बुद्धि का विकास आवश्यक है। हमें 'तुरंत ना कहो' जैसे सरलीकृत

संदेशों से आगे बढ़कर आलोचनात्मक सोच विकसित करनी होगी। सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केंद्र, किफ़ायती पुनर्वास और दूरभाष परामर्श सेवाओं को नीतिगत प्राथमिकता मिलनी चाहिए; जब व्यक्ति को समय पर मनोवैज्ञानिक सहायता मिलती है, तो नशे की ओर जाने की संभावना उल्लेखनीय रूप से कम हो जाती है। युवाओं को खेल, कला, साहित्य और सामाजिक सेवा की ओर प्रेरित करना भी उतना ही ज़रूरी है क्योंकि एक व्यस्त, उद्देश्यपूर्ण जीवन ही नशे का सबसे प्रभावशाली विकल्प है। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि नशे के पीड़ित को 'चरित्र, दोष' की दृष्टि से नहीं बल्कि सहायता के पात्र के रूप में देखना होगा। जब तक समाज नशे को कलंक मानता रहेगा, पीड़ित लोग मदद माँगने में संकोच करते रहेंगे।

निष्कर्ष: पहचानना ही पहला कदम है

नशा आज के समाज की एक जटिल, बहुआयामी और गहरी जड़ें जमा चुकी व्याधि है, जो व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों को एक साथ प्रभावित करती है। इसे केवल किसी की 'कमज़ोरी' या 'बुरी संगत' का परिणाम मानकर नज़रअंदाज़ करना अब संभव नहीं है। यह ज़रूरी है कि हम इस समस्या को स्वीकारें, बिना शर्म के, बिना इनकार के, क्योंकि किसी भी संकट से बाहर निकलने की पहली शर्त है, उसे ईमानदारी से पहचानना, और उसके बाद सामूहिक जिम्मेदारी के साथ, मिलकर उसका सामना करना।

"नशा चाहे किसी भी रूप में हो,उसकी परिणति हमेशा एक जैसी होती है—हानि;और यही ईमानदार स्वीकृति इस अंधेरे से बाहर निकलने की पहली और सबसे ज़रूरी सीढ़ी है।"

डिजिटल युग में मानवीय संवेदनाएँ

कार्तिक गहलोत
(सहायक प्रबंधक)

इक्कीसवीं सदी को यदि किसी एक शब्द में परिभाषित किया जाए, तो वह शब्द होगा—डिजिटल। आज का मानव जीवन तकनीक के बिना अधूरा प्रतीत होता है। मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, किंतु इसी के साथ एक गंभीर प्रश्न भी खड़ा किया है—क्या इस डिजिटल प्रगति की दौड़ में हम अपनी मानवीय संवेदनाएँ खोते जा रहे हैं?

डिजिटल युग ने ज्ञान और सूचना के द्वार सबके लिए खोल दिए हैं। आज विश्व की कोई भी जानकारी कुछ ही क्षणों में हमारी उँगलियों पर उपलब्ध है। संचार पहले की तुलना में कहीं अधिक तेज़, सुलभ और व्यापक हो गया है। दूर बैठे अपने प्रियजनों से वीडियो कॉल पर बात करना, ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से ज्ञान अर्जित करना और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर अपनी प्रतिभा को दुनिया के सामने प्रस्तुत करना—ये सभी इस युग की सकारात्मक उपलब्धियाँ हैं।

किन्तु इस चमकती दुनिया का एक दूसरा पहलू भी है। तकनीक के अत्यधिक उपयोग ने मानव संबंधों की ऊष्मा को कहीं न कहीं कम कर दिया है। परिवार के सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अपने-अपने मोबाइल स्क्रीन में व्यस्त रहते हैं। बातचीत के स्थान पर 'मैसेज' ने ले लिया है और भावनाओं की गहराई 'इमोजी' तक सिमट कर रह गई है। हम आभासी मित्रों से तो जुड़े हैं, पर वास्तविक रिश्तों से धीरे धीरे दूर होते जा रहे हैं।

सोशल मीडिया ने जहाँ अभिव्यक्ति का मंच दिया है, वहीं दिखावे और तुलना की प्रवृत्ति को भी जन्म दिया है। लोग अपनी ज़िंदगी

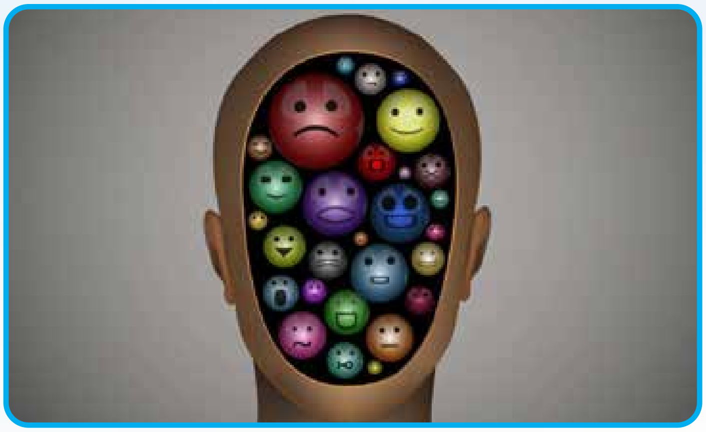

का सजा संवरा रूप प्रस्तुत करते हैं, जिससे दूसरों के मन में हीनभावना, तनाव और अकेलापन पनपता है। लाइक्स और फ़ॉलोअर्स की संख्या आज आत्ममूल्य का पैमाना बनती जा रही है, जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय है।

इस सबके बावजूद यह कहना गलत होगा कि तकनीक स्वयं संवेदनहीन है। वास्तव में प्रश्न तकनीक का नहीं, उसके उपयोग का है। यदि डिजिटल साधनों का प्रयोग मानवीय मूल्यों के साथ किया जाए, तो ये संवेदनाओं के संवाहक भी बन सकते हैं। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से सामाजिक आंदोलनों को आवाज़ मिल रही है, ज़रूरतमंदों तक सहायता पहुँच रही है और

आपदा के समय मानवीय सहयोग का अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है।

आवश्यकता है संतुलन की। हमें यह समझना होगा कि तकनीक जीवन का साधन है, लक्ष्य नहीं। डिजिटल दुनिया में रहते हुए भी हमें संवाद, सहानुभूति, करुणा और संवेदनशीलता को जीवित रखना होगा। बच्चों को स्क्रीन के साथ साथ रिश्तों का महत्व भी सिखाना होगा और स्वयं भी समय निकालकर अपनों के साथ वास्तविक क्षण साझा करने होंगे।

अंततः यही कहा जा सकता है कि डिजिटल युग में मानवीय संवेदनाओं का संरक्षण हमारे अपने हाथों में है। यदि हम तकनीक को मानवता से जोड़कर चलें, तो यह युग न केवल प्रगति का, बल्कि संवेदनशील और सहृदय समाज के निर्माण का भी बन सकता है। यही संतुलन हमें एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाएगा।

वन सभ्यताओं की जड़ों में और रेगिस्तान उनके अंत में आते हैं

शशि शर्मा
(सहायक प्रबंधक)

हम विश्व के वनों के साथ जो कर रहे हैं, वह उसी का दर्पण प्रतिबिंब है जो हम स्वयं के साथ और एक-दूसरे के साथ कर रहे हैं। — **महात्मा गांधी**

यह कथन पर्यावरण और मानव समाज के आपसी संबंध को अत्यंत सरल किंतु गहन रूप में अभिव्यक्त करता है। इसका मूल भाव यह है कि मानव सभ्यता का उत्थान प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर वनों, पर आधारित रहा है और जब इनका अंधाधुंध दोहन किया जाता है, तब प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है, जिसके परिणाम अंततः विनाशकारी सिद्ध होते हैं। इस निबंध में हम इस कथन के महत्व को ऐतिहासिक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करेंगे और वर्तमान समय में भारत एवं विश्व के समक्ष खड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों पर भी विचार करेंगे।

मानव सभ्यता के आरंभिक काल में वन जीवन का आधार हुआ

करते थे। भोजन, आवास, ईंधन और औषधियों के लिए मनुष्य सीधे प्रकृति पर निर्भर था। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि मानव के प्रारंभिक विकास में वनों की भूमिका अत्यंत निर्णायक रही है। वनों ने न केवल पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखा, बल्कि सभ्यताओं को पनपने के लिए एक स्थायी आधार भी प्रदान किया।

सिंधु घाटी, मेसोपोटामिया और मिस्र जैसी प्राचीन सभ्यताएँ उन्हीं क्षेत्रों में विकसित हुईं जहाँ जल और वन संसाधनों की प्रचुरता थी। कृषि और पशुपालन के विकास के साथ वनों को काटकर भूमि का उपयोग किया गया। प्रारंभिक चरणों में यह प्रक्रिया संतुलित रही, किंतु जनसंख्या वृद्धि और मानवीय गतिविधियों के विस्तार के साथ संसाधनों का अत्यधिक दोहन शुरू हुआ, जिससे वनों की स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ती चली गई।

इतिहास साक्षी है कि अनेक सभ्यताओं का पतन वनों के विनाश से जुड़ा रहा है। मेसोपोटामिया की सभ्यता में जल संसाधनों के अनुचित प्रबंधन और भूमि की उर्वरता के ह्रास ने कृषि को कमजोर कर दिया, जो वनों के क्षरण का प्रतिफल था। इसी प्रकार माया सभ्यता के पतन के पीछे भी वनों का अत्यधिक कटाव और भूमि की क्षति प्रमुख कारणों में शामिल थे।

सभ्यता के आगे बढ़ने के साथ-साथ वनों पर दबाव भी बढ़ता गया। औद्योगिक क्रांति ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया। बड़े पैमाने पर वनों की कटाई और बढ़ते कार्बन उत्सर्जन ने जलवायु परिवर्तन को जन्म दिया, जिसके दुष्परिणाम आज हम वैश्विक तापन और मौसम के असंतुलन के रूप में अनुभव कर रहे हैं।

आज के समय में वनों का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पृथ्वी की लगभग 31 प्रतिशत भूमि वन क्षेत्र से आच्छादित है, जो जैव विविधता संरक्षण और जलवायु संतुलन में अहम भूमिका निभाते हैं। वन वर्षा चक्र को नियंत्रित करते हैं, तापमान को संतुलित रखते हैं और वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

भारत जैसे देश में वनों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह एक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है जहाँ जलवायु परिवर्तन का सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन और जल संसाधनों पर पड़ता है। इस संदर्भ में भारत सरकार द्वारा "राष्ट्रीय वन नीति" जैसी योजनाएँ तथा अमेज़न वन संरक्षण जैसी अंतरराष्ट्रीय पहलें वनों की अनिवार्यता को रेखांकित करती हैं।

वनोन्मूलन के परिणामस्वरूप उत्पन्न मरुस्थलीकरण आज एक गंभीर वैश्विक समस्या बन चुका है। मरुस्थलीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें अत्यधिक वन कटाई, असंतुलित कृषि और जल

के अनुचित उपयोग के कारण उपजाऊ भूमि धीरे-धीरे बंजर रेगिस्तान में बदल जाती है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, विश्व की लगभग 2 अरब हेक्टेयर भूमि इस संकट से प्रभावित है।

भारत में राजस्थान का थार रेगिस्तान इस समस्या का सशक्त उदाहरण है। वनों की कटाई, अत्यधिक पशुचारण और बदलती जलवायु परिस्थितियों ने इस क्षेत्र को और अधिक शुष्क बना दिया है। रेगिस्तान का विस्तार न केवल प्राकृतिक पारिस्थितिकी को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि मानव जीवन, कृषि व्यवस्था और जल स्रोतों के लिए भी गंभीर संकट उत्पन्न करता है।

विश्व स्तर पर वनों की रक्षा के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। भारत ने भी इस दिशा में कई उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। "राष्ट्रीय वन नीति" के तहत वन क्षेत्र को कुल भूभाग के 33 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। साथ ही "वन संरक्षण अधिनियम 1980" के माध्यम से अवैध कटाई पर रोक लगाने के लिए कठोर प्रावधान किए गए हैं।

वन महोत्सव, वृक्षारोपण अभियानों और पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र का "रेड प्लस" कार्यक्रम विकासशील देशों को वन संरक्षण हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करता है।

वन संरक्षण और सतत् विकास एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। सतत् विकास का अर्थ ऐसे विकास मॉडल से है जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों से समझौता न करे। सतत् विकास लक्ष्यों में जलवायु कार्यवाही और पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल हैं।

भारत ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए "राष्ट्रीय सौर मिशन" और "स्वच्छ भारत अभियान" जैसी कई पहलें शुरू की हैं। ये प्रयास न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक हैं, बल्कि दीर्घकालिक सतत् विकास की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

“वन सभ्यताओं से पहले आते हैं और रेगिस्तान उनके बाद आते हैं” यह कथन मानवता के लिए एक गंभीर चेतावनी है। इतिहास बार-बार यह सिद्ध करता है कि जो समाज अपने पर्यावरण के प्रति उदासीन रहता है, उसका अंत अवश्यंभावी होता है।

आज के दौर में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति इस बात का संकेत है कि अब पर्यावरण को हमारी प्राथमिकता बनाना अनिवार्य है। वन संरक्षण केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की आधारशिला है। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है।

यदि हमने समय रहते अपने वनों की रक्षा नहीं की, तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी उपजाऊ धरती भी रेगिस्तान में बदल जाएगी। इसलिए सतत् विकास, पर्यावरणीय चेतना और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से वनों का संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस पृथ्वी पर सुरक्षित और समृद्ध भविष्य पा सकें।

***पेड़ पृथ्वी का वह अथक प्रयास हैं, जिनके माध्यम से वह स्वर्ग से संवाद करती है।* — रवींद्रनाथ टैगोर**

निगम में गणतंत्र दिवस समारोह - 2026

वृद्धि के लिए उत्साह, उत्कृष्टता की चाह.

आपत्काले रक्षिष्यामि
GIC Re

निवल संपत्ति
31.12.2025: ₹48,490.40 करोड़
31.12.2024: ₹40,745.48 करोड़

सकल प्रीमियम
31.12.2025: ₹32,976.26 करोड़
31.12.2024: ₹30,786.87 करोड़

सॉल्वेंसी अनुपात
31.12.2025: 3.87%
31.12.2024: 3.52%

31 दिसंबर 2025 को समाप्त तिसरी तिमाही के लिए समीक्षित वित्तीय परिणाम

(₹ करोड़ में)

अनु. क्र.	विवरण	एकल			समेकित		
		समाप्त तिमाही (तीन महीने)	समाप्त वर्ष के आकंड़े (नौ महीने)	पिछले वर्ष में समाप्त हुए संबंधित तीन महीने	समाप्त तिमाही (तीन महीने)	समाप्त वर्ष के आकंड़े (नौ महीने)	पिछले वर्ष में समाप्त हुए संबंधित तीन महीने
		(31/12/2025)	(31/12/2025)	(31/12/2024)	(31/12/2025)	(31/12/2025)	(31/12/2024)
		समीक्षित	समीक्षित	समीक्षित	समीक्षित	समीक्षित	समीक्षित
1.	परिचालनों से कुल आय $	10,986.55	32,976.26	9,967.71	11,083.46	33,206.85	10,105.73
2.	अवधि के लिए निवल लाभ/(हानि) (कर, असाधारण और/या विशिष्ट मदों से पहले#)	2,116.93	7,833.24	2,168.69	2,360.32	8,339.09	2,183.80
3.	कर से पूर्व की अवधि के लिए निवल लाभ/(हानि) (असाधारण और/ या विशिष्ट मदों के बाद#)	2,116.93	7,833.24	2,168.69	2,360.32	8,339.09	2,183.80
4.	कर के पश्चात की अवधि के लिए निवल लाभ/(हानि) (असाधारण और/या विशिष्ट मदों के बाद#)	1,518.92	6,137.94	1,621.35	1,725.66	7,129.79	1,676.62
5.	अवधि के लिए कुल व्यापक आय [अवधि के लिए लाभ/(हानि) (कर के बाद) और अन्य व्यापक आय (कर के बाद) शामिल]	1,518.92	6,137.94	1,621.35	1,725.66	7,129.79	1,676.62
6.	इक्विटी शेयर पूंजी	877.20	877.20	877.20	877.20	877.20	877.20
7.	पिछले वर्ष के लेखापरीक्षित बैलेंस शीट में दर्शाई गई आरक्षित निधियाँ (पुनर्मूल्यांकन आरक्षित निधि को छोड़कर)	49,813.34	49,813.34	40,968.33	55,029.35	55,029.35	44,384.60
8.	प्रति शेयर आय (प्रत्येक ₹ 5/- का) (जारी एवं बंद परिचालनों के लिए)						
	1. बुनियादी	8.66	34.99	9.24	9.84	40.64	9.56
	2. तनुकृत	8.66	34.99	9.24	9.84	40.64	9.56

नोट:

क. उपरोक्त विवरण सेबी (लिस्टिंग एवं अन्य प्रकटीकरण आवश्यकताएँ) विनियम, 2015 के विनियम 33 के अंतर्गत स्टॉक एक्सचेंजों के साथ फाइल किये गये तिमाही और वार्षिक वित्तीय परिणामों के विस्तृत प्रारूप का एक अंश है। तिमाही और वार्षिक वित्तीय परिणामों का विस्तृत प्रारूप, लेखा परीक्षक की रिपोर्ट के साथ, स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट्स **(www.bseindia.com)** तथा **(www.nseindia.com)** पर उपलब्ध है और निगम की वेबसाइट पर **(https://www.gicre.in/en/investors-public-disclosures/investors-en/financial-performance/financial-results)** पोस्ट किया गया है और इसे QR कोड को स्कैन करके एक्सेस किया जा सकता है।

ख. $ परिचालन से कुल आय सकल लिखित प्रीमियम, पुनर्बीमा का सकल तथा लागू करों का निवल योग है ।

ग. # भारतीय लेखा मानक (आईएनडी एएस) वर्तमान में भारत में बीमा कंपनियों पर लागू नहीं हैं।

स्थान : मुंबई
दिनांक : 07.02.2026

भारतीय साधरण बीमा निगम की ओर से

हस्ता/-
हितेश जोशी
ईडी (सीएमडी का अतिरिक्त प्रभार)
DIN: 09322218

उपर्युक्त प्रदर्शित जीआईसी री ट्रेड लोगो जीआईसी री का है और इसका उपयोग जीआईसी री द्वारा लाइसेंस के तहत किया जाता है। "सुरक्षा", 170, जमशेदजी टाटा रोड, चर्चगेट, मुंबई 400 020, दूरभाष: +91 22 2286 7000, सीआईएन: L67200MH1972G01016133 आईआरडीए रजिस्टर: 112, वेबसाइट www.gicre.in

भारतीय साधारण बीमा निगम

'सुरक्षा', 170, जमशेदजी टाटा रोड, चर्चगेट, मुंबई-400020, भारत । टेलिफोन (बोर्ड): +91 22 2286 7000 • ईमेल: investors.gic@gicre.in

आईआरडीएआई पंजीकरण संख्या: 112 **सीआईएन: L67200MH1972GOI016133** **www.gicre.in**

आपत्काले रक्षिष्यामि
GIC Re
भारतीय साधारण बीमा निगम
General Insurance Corporation of India

सुरक्षा, 170, जे.टाटा रोड, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.
दूरभाष - 91 22 2286 7000 फैक्स : 91 22 2289 9600
ई-मेल : infogicofindia.com, www.gicofindia.in,
शाखा कार्यालय : दुबई, लंदन, मलेशिया, प्रतिनिधि कार्यालय : मास्को
सार्वभौमिक पुनर्बीमा समाधानकर्ता